Chapter-4

अध्याय - ४

मन्नू भंडारी

के

कथा साहित्य

में

मनोवैज्ञानिक

समस्याएँ

प्रस्ताविक :

हमारे शास्त्रों में मन को हृदय, अंतकरण, आत्मा, ब्रह्म, शरीर रूपी रथ का रथी आदि संज्ञाएँ दी गई हैं। श्रीमद भगवद्गीता में मन का विस्तृत विवेचन किया गया है। किंतु इसी मन का मनो वैज्ञानिक तार्किक, बुद्धिगम्य विश्लेषण पिछले शतकों में फ्रायड़, एड़लर युंग, पावलेव जैसे मनोवैज्ञानिकों ने किया है। और मन के विभिन्न स्तरों का विवेचन करते हुए मन के ज्ञान, मन, अवचेतन मन, अचेतन मन जैसे विभाग करते हुए उनका विशद् पारिभाषित किया है। मन, और उसमें भी अचेतन मन की गहराईयों का पार पाना बड़ा ही दुस्कर कार्य है। इधर यह तो मनोविज्ञान संबंधी विविध अविष्कार हुए हैं उनके प्रकाश में साहित्य में भी, विशेषत: कथा- साहित्य एवं नाट्य-साहित्य में मनोविश्लेषण को विशेष महत्व दिया जा रहा है और जिसके कारण इधर के कथाकार कथा-साहित्य में, उपन्यास और कहानी में, मनोवैज्ञानिक समस्याओं के निरूपण को सविशेष तवज्जों दे रहे हैं। उनकी स्थापना है कि जीवन में केवल परिवारिक, सामाजिक, आर्थिक इत्यादि समस्याएँ ही नहीं होती, अपितु मनोवैज्ञानिक समस्याएँ भी होती हैं, बल्कि

ऐसा भी देखा गया है कि कई दूसरे प्रकार की समस्याओं का उत्स मनोवैज्ञानिक समस्याओं में निहित होता है। प्रकट रूप से समस्या सामाजिक या पीारिवारिक दिखाई पड़ती है, किंतु उसका मूल कहीं-न-कहीं मनोवैज्ञानिक समस्या में होती है। प्रस्तुत अध्याय में हमारा उपक्रम सुश्री मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में जो मनोवैज्ञानिक समस्याएँ उपलब्ध होती हैं। उनका सोद्धाहरण विवेचन-विश्लेषण का है।...

मनोविज्ञान 'मन' सम्बन्धी विशिष्ट ज्ञान का प्रस्तोता है। मन अदृश्य, अस्पष्ट अस्पृश्य, विवादास्पद और अनुमानित है। मनः स्थिति का विश्लेषक व्याख्याता मनुष्य का व्यवहार है। अतः मनोविज्ञान मनुष्य जीवन के व्यवहार का विश्लेषक है। डॉ. ममता शुक्ला मनोवैज्ञानिक और मनौविश्लेषण के अंतर को स्पष्ट करते हुए लिखती हैं -

"मनोविश्लेषण एक विशेष युक्ति है जिसके द्वारा अज्ञात मन के अंदर स्थित द्वन्द्व एवं भावना ग्रन्थियों की जानकारी प्राप्त की जाती है। सभी प्राणियों का समुचित व्यवहार उनकी मानसिक शक्ति पर निर्भर करता है। मनोविश्लेषण इसी मानसिक शक्ति के उद्‌गमन और वितरण का अध्ययन करता है। इस प्रकार यह भी एक मानसिक उपचार विधि है। इसकी अपनी धारणाएँ तथा समस्याएँ हैं इसे एक स्वतंत्र विज्ञान माना जा सकता है।"[१]

साहित्य से मनोविज्ञान का सम्बन्ध :

मनोविज्ञान मन की क्रियाओं का विज्ञान है। मन की क्रियाएँ अपरिमित हैं यही कारण है कि मनोविज्ञान द्वारा कथा साहित्य की विषय वस्तु जुटाने की कोई सीमा नहीं है। प्रेम, घृणा, क्रोध, ईर्ष्या, स्वार्थ आदि मनोभावों के घात-प्रतिघात के आधार पर किसी भी कलाकृति को स्थूल वर्णन द्वारा मनोवैज्ञानिक पुट दिया जा सकता है। फ्रायड "मन की तीन स्थितियाँ मानते हैं - चेतना, अचेतन, और अर्द्धचेतना।"

'यजुर्वेद' के एक श्लोक में कहा गया है 'जो जाग्रत अवस्था में दूर चला

जाता है और सुप्त अवस्था में भी इसी प्रकार गतिशील होता है, ऐसा दिव्य गुण विभूषित और ज्योतियों की ज्योति, यह मेरा मन, शिव संकल्प युक्त है।

मन के महत्व को प्रतिपादित करते हुए हिन्दी के पहले मोवैज्ञानिक उपन्यास 'निर्मला' में स्वयं प्रेमचन्द लिखते हैं -

''मन ! तेरी गति कितनी विचित्र है, कितनी रहस्य से भरी हुई कितनी दुर्बोध ! तू कितनी जल्दी रंग बदलता है। इस कला में तू निपुण है, आतिशबाजी की चरखी को भी रंग बदलते कुछ देर लगती है, पर तुझे रंग बदलने में उसका लक्षांस भी नहीं लगता।''

हिन्दी आलोचक डॉ. रामरतन भटनागर लिखते हैं-

''साहित्य का विषय है 'मनस्य'। मनुष्य का मन और उसकी आकांक्षाएँ संक्षेप में उसके चरित्र का सब कुछ ... उसका 'भीतरी बाहरी' उसका 'आत्मपर' उसकी स्वनिष्ठा उसकी परनिष्ठा में भी 'स्वनिष्ठा' इस सबकी विवेचना विश्लेषण ही तो मन का आंगन है।''[४]

यानि साहित्य और मनोविज्ञान का विभिन्न सम्बन्ध है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल रागों या मनोवेगों का परिष्कार करते हुए सृष्टि के साथ रागात्मक सम्बन्ध स्थापन को साहित्य के उदात्त रूप की संज्ञा देते हैं। डॉ. नगेन्द्र भी जीवन की मूल प्रेरणाओं को साहित्य की मूल प्रेरक शक्तियाँ स्वीकारते हैं।

आज के संघर्षपूर्ण युग में सामाजिक दृष्टिकोण से मानसिक रोग जटिल समस्या बन गए हैं। ऐसे मानसिक रोगों को मनोरागी कहा जाता है। मानसिक रोगियों को दो भागों में बाँटा गया है -

(१) मन: स्नायु विकृत्ति

(२) मनोविकृति

मन: स्नायु विकृत्तियाँ :

''मन: स्नायु विकृत्ति वस्तुत: रसात्मक संवेदनात्मक व प्रतिक्रियाओं से सम्बन्धित मानसिक विकृत्तियों हल्का प्रकार है यानि की मानसिक एवं स्नायु से

संबंधित विकृतियाँ मन, स्नायु विकृत्तियाँ होती है ; ऐसी विकृत्तियों से जुड़ा हुआ मनुष्य मानसिक रूप से अस्वस्थ रहता है, परंतु उसे आस-पास के वातावरण का पूर्ण ज्ञान रहता है। ऐसी विकृत्तियाँ मनोवैज्ञानिक कारणों से ही उत्पन्न होती है। अत: मन: स्नायु विकृत व्यक्तित्व वह होता है जो इस प्रकार का व्यवहार करता हों कि उस संस्कृति में अन्य व्यक्ति की प्रतिबल श्रेणी कठोर या तीव्र होती जाती है, वैसे-वैसे ही उसका मानसिक स्वास्थ्य असन्तुलित होता जाता है तथा इस कठोरता व तीव्रता के आधार पर विभिन्न प्रकार के मन संताप व मनोविज्ञिप्त का जन्म होता है।''[५]

मन: स्नायु विकृतियाँ निम्नलिखित हैं :

(१) चिंता मन: स्नायुविकृत्ति

(२) मनोग्रस्तता बाध्य मन: स्यानु विकृत्ति

(३) क्षोभोन्माद (Hysteria)

(४) दुर्भीति (Phobia)

(५) मन: श्रान्ति (Newrasthenia)

(१) चिंता मन: स्नायुविकृत्ति (Anxiety Neurosis) :

चिंता मन: स्नायुविकृत्ति की प्रमुख विशेषता भय है। क्योंकि भय के माध्यम से ही चिंता उत्पन्न होती है। चिंता दो प्रकार की होती है - (१) सामान्य चिंता (२) असामान्य चिंता। इन विकृत्तियों का चित्रण मन्नूभंडारी ने अपने कथासाहित्य में किया है। 'गीत का चुंबन' की कुन्नी और 'अभिनेता' की रंजना निखिल और दिलीप के कई दिनों तक घर पर न आने से चिंतित हो जाती है। इसी प्रकार 'दरार भरने की दरार' की नन्दी की चिंता थोड़ी सी स्वाभाविक है। क्योंकि दीदी श्रुति तथा विभु दो अलग-अलग हो जाने का विचार करते हैं। इस प्रकार की चिंताएं सामान्य हैं।

'ईसा के घर इन्सान' की एंजिला के उन्मुक्त व्यवहार से दु:खी होकर मधर

उसे फादर के पास भेज देती है। जिससे एंजिला के भेज दिए जाने पर 'मैं' चिंतित हो जाती है। 'तीसरा आदमी' का 'सतीश' किसी बड़ी दुर्घटना होने वाली है ऐसी आशंकाओं के कारण काफी चिन्तित हो जाता है। असामान्य चिंता व्यक्तित्व को भी असामान्य बना देती है। 'सयानी बुआ' की बीमार 'अन्नु' के भाईसाहब के साथ दु:ख दूर करने हेतु पहाड़ पर चले जाना तथा कई दिनों तक पत्र न भेजना, इस कारण बुआ काफी चिंतित हो जाती है। घर की सारी व्यवस्था इससे बिगड़ जाती है। क्योंकि अन्नु के प्रति बुआजी के मस्तिष्क में दु:खद विचार ही आते हैं। बुआजी का दु:स्वप्न देखना तथा लगातार रोते रहना यह सब असामान्य चिंता का ही कारण है।

(२) मनोग्रस्तता बाध्य मन: स्नायु विकृत्ति :

मनोगस्तता विकृति के अंदर रोगी एक विचार से छूटकारा पाने पर दूसरे विचार का शिकार हो जाता है। तथा वह अत्यधिक संवेदनशील हो जाता है।

इस विकृत्ति का चित्रण भी मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में मिलता है। 'तीसरा आदमी' कहानी उसका श्रेष्ठ उदाहरण है। इस कहानी का सतीश अपनी पत्नी शकुन तथा लेखक आलोक को कमरे में बन्द देखकर अत्यधिक सन्देहशील बन जाता है। और उसके मन में एक के बाद एक विचार आते ही जाते हैं। वह इस स्थिति को अपने आपको जिम्मेदार समझता है। तो कभी वह शकुन को। जैसे -

''जिस शकुन को पिछले पाँच साल से वह अपने शरीर के अभिन्न अंग की तरह प्यार करता जा रहा है, वह इस समय किसी और की बाहों में पड़ी मस्ती मार रही होगी।''[६]

इस विचार से जब मुक्त होता है तो वह ऐसा सोचने लगता है -

''उसे लगा, वह सचमुच ही पौरुषहीन है। कोई मर्द बच्चा होता तो, दो लात मारता। दरवाजा और झोंटा पकड़कर बाहर कर देता शकुन को। और दो झापट मारता उस लफंगे को। उसके सारे अस्तित्व को बुरी तरह मथता हुआ

आज यह विश्वास पूरी तरह उसके मन में जग गया कि वह पुरुष नहीं है ...।''[७]

(३) क्षोभोन्माद :

प्रत्येक व्यक्ति के सामने कुछ जिम्मेदारियाँ या समस्याएँ होती है। जब वह जीवन की इन समस्याओं का सामना नहीं कर पाता और असफल एवं असमर्थ हो जाता है तो निराश होकर वह ऐसी क्रियाएँ करने लगता है, जो अस्वाभाविक होती है तो वे क्षोभोन्माद विकृत्ति का भोग माना जा सकता है। 'क्षय' कहानी इस विकृत्ति का श्रेष्ठ उदाहरण है।

''एकाएक कुन्ती को लगा कि उसकी यह खाँसी, यह खोखली-खोखली आवाज, पापा की खाँसी से कितनी मिलती जुलती है... हूबहू वैसी ही तो है। सहम कर उसने गाड़ी के शीशे में देखा कहीं उसके चेहरे पर....।''[८]

इस प्रकार वह इस समस्या में उलझती ही जाती है।

(४) दुर्भीति :

दुर्भीति एक प्रकार का भय है। इसमें रोगी यह तो समझता है कि विशिष्ट वस्तु या परिस्थिति के प्रति यह भय व्यर्थ है। फिर भी वह इस भय से मुक्त नहीं हो पाता।

मन्नूजी की 'चश्मे' कहानी में निर्मल उक्त रोग से ग्रस्त है। अपनी मंगेतर शैल को जब टी.बी. हो जाने पर तो वह भयग्रस्त हो जाता है कि उसे बीमारी न हो जाय। इस लिए सौनिटोरियस के फाटक पर वह रुक जाता है। यही निर्मल पहले बड़ी-बड़ी बातें करता है। लेकिन आज उसके घर के फाटक तक आकर वापस चला जाता है। यह निर्मल पहले -

''शैल-जिससे मिलने के लिए कभी उसके क्षण युग-युग जैसे लम्बे हो जाया करते थे। वही शैल उसके इतने समीप है फिर भी उसके मन में मिलने की कोई उत्सुकता नहीं, आतुरता नहीं। वह हृदय से शैल के पास जाना चाहता है, पर न जाने कौन है जो, उसे निरन्तर पीछे की ओर घसीट रहा है।''

(५) मन: श्रान्ति :

मन्नू भंडारी ने इस विकृत्ति का चित्रण 'बाहों का घेरा' नामक कहानी में किया है। इस कहानी की कम्मों अनिद्रा मन: श्रान्ति से पीड़ित है। जैसे - ''चार रात हो गई है, वह बिल्कुल नहीं सोई है। यों भी नींद उसे आती ही नहीं यह जलन और चुभन सोने ही नहीं देती - पर इधर तो वह एक पल भी नहीं सोई है। वह कितना चाहती है कि उसे एक गहरी नींद ही आ जाए - इतनी और इतनी गहरी कि कुछ समय के लिए तो यह भारीपन दूर हो जाएं ....।''[१०]

उक्त पाँच विकृत्तियाँ मन: स्नायु विकृत्ति के अन्तर्गत आती हैं।

मनोविकृति :

मानसिक रोग दो प्रकारों में से यह एक प्रकार है। ''मनोविकृत्ति एक संगीन असामान्यता है। इस प्रकार के रोग से ग्रसित व्यक्ति का व्यक्तित्व अत्यधिक विघटित हो जाता है। रोगी को यथार्थ बोध नहीं हो पाता और आत्मसंयम, सामाजिक सन्तुलन शून्य। ऐसा व्यक्तित्व प्राय: कल्पनालोक में विचरण करता है। यह अच्छे बुरे के ज्ञान से परे रहता है।''[११]

मनोविकृत्ति के दो प्रमुख सामान्य लक्षण हैं।

(१) व्यामोह

(२) विभ्रम

व्यामोह :

''व्यामोह में व्यक्ति यह समझता है कि इस संसार के लोग स्वार्थी, निष्ठुर, निर्दयी हैं। वे उसे पीड़ा और दु:ख पहुँचाना चाहते है। वे उसकी योग्यताओं और महानता क्षुब्ध हैं, इसलिए वे उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचते हैं।''[१२]

व्यामोह में व्यक्ति को झूठा विश्वास होता है, उसे व्यक्ति सत्य मानता है। कभी-कभी व्यामोह में व्यक्ति अपने आपको एक महान लेखक, महान वैज्ञानिक, महान समाज सुधारक या ईश्वर का अवतार समझने लगता है। मन्नूजी

की 'पंडित गजाधर शास्त्री' कहानी के शास्त्री जी इस रोग का शिकार है । वह कहता है-

''तो मैं हूँ कहानी लेखक पंडित गजाधर शास्त्री यदि हिन्दी साहित्य से आपका थोड़ा भी परिचय होगा तो आपने गजाधर-शास्त्री का नाम अवश्य सुना होगा। वह नाचीज मैं ही हूँ।''[१३]

आगे भी लेखिका ने इस विकृत्ति का चित्रण करते हुए शास्त्री के शब्दों कहलवाया -

''हिन्दी की शायद ही कोई ऐसी पत्रिका होगी जिसके सम्पादक का पत्र न आया हो कि शीघ्र ही अपनी रचना भेजिए। अब मैं नई कहानी क्या लिखूँ, जवाब लिखते -लिखते ही परेशान हो गया। और मैंने देखा कि बच्चे-बच्चे के मुँह पर मेरा नाम हो गया। कहाँ निकल जाऊ लोग उँगली उठाकर कहते ; यह देखे 'अमिरी गरीबी' के लेखक पं. गजाधर शास्त्री जा रहे हैं।''[१४]

शास्त्री जी ने एक कहानी लिखी थी, वह पत्रिका में भी छपी थी। लेकिन बहुत-बड़े लेखक नहीं थे । वे व्यामोह रोग का शिकार होने के कारण इस प्रकार की बाते करते रहते हैं।

इस विकृत्ति का दूसरा लक्षण यह है कि व्यक्ति यह समझने लगता है कि लोग उसे धोखा देना चाहते हैं या वे षड्यंत्र रच रहे हैं। उसे उत्पीड़न व्यामोह भी कहते हैं। मन्नूजी की 'रेत की दीवार' कहानी के अंतर्गत इस समस्या का चित्रण किया है । इस कहानी का नायक रवि के पिता उसे अपनी सामर्थ्य से परे इन्जीनियर बनाना चाहते हैं तथा घर की अन्य जरूरी पढ़ाई पर व्यय करते हैं। जिसके फलस्वरूप रवि उत्पीड़न व्यामोह का शिकार हो जाता है । उसे लगा बाबूअम्मा की सहनशीलता और त्याग, चन्दा की समझदारी सब जैसे एक गुप्त षड्यंत्र उसके प्रति रच रहे हैं ऐसा महसूस करता है।

आंगिक चेष्टाएँ एवं परिगमन की समस्या :

आंगिक चेष्टाएँ काम अतृप्ति द्वारा उपजी चेस्टा है । यह चेस्टा

स्वाभाविक भी हो सकती है और असामान्य भी।

मन्नू भंडारीने 'गीत का चुम्बन' नामक कहानी में उक्त समस्या का चित्रण किया है। इस कहानी का निखिल कुमी को चूम लेता है। निखिल काम अतृप्त व्यक्ति नहीं है, निखिल को चुम्बन के लिए परिवेश तथा वातावरण ने बाध्य किया -

''कुमी ने कमरे के सारे खिड़की दरवाजे बन्द कर दिये, जिससे वर्षा की टिप-टिप में उसका स्वर टूट न जाए। बहुत विभोर होकर उसने गीत गाया.... निखिल को लगा कि उस गीत को सुनकर वह गश खा जाएगा, पागल हो जाएगा। गीत समाप्त हो गया पर दोनों पर जैसे 'नशा' सा छा गया था।... पहली बार उसे लगा कि वह अपने पर काबू नहीं कर पा रहा है जाने किस आवेश में वह उठा और सामने बैठी हुई कुमी को बाहों में भरकर चूम लिया।''[१५]

आधुनिक युग में सभ्रांत परिवारों के स्त्री-पुरुषों व 'किशोर-किशोरियों को खुलेपन की वे सीमा तक ले जाते हैं', जहाँ तक कि वे अपने कामवृत्तियों को दबा पाने में समर्थ पाकर एक दूसरे को अपनी ओर आकर्षक करने का प्रयास नहीं करते। अपितु, अपनी तरफ से पहल करके कामवृत्ति प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं। मन्नूभंडारी का 'एक इंच मुस्कान' उसका श्रेष्ठ उदाहरण है। 'एक इंच मुस्कान' की अमला पति से संबंध तोड़ देने पर मेहता चावला, कपूर कैलास की ओर आकर्षित होती है। फिर वह अमर को पुरी तरह अपनाकर उसे कुछ देना चाहती है। इसी कारण अमला की कामोत्तेजनाएँ और आंत्रित चेष्टाएं अमर के साथ उसे ऐसा व्यवहार करने को मजबूर कर देती हैं कि वह उत्तेजित हो जाएं। अमला कहती है -

''समुद्र की इस चंचलता और अधीरता के बीच भी तुम शांत कैसे रह सकते हो अमर ? निरूदिग्न निर्विकार। और उसने खींचकर अमर का हाथ अपने वक्षस्थल पर दबा लिया। अमला अमर के हाथ को दबाती रही।.... अमला आवेश में जाकर अपनी दानों बाहें अमर के गले में डाल दी। और अमर को अपने पर झुका लिया, फिर जरा-सा सिर उठाकर अमर के अधरों पर अपने अधर

टिका दिए।''[१६]

मन्नूजी की 'बाहों का घेरा' कहानी में भी इस समस्या का चित्रण मिलता है। इस कहानी की कम्मों अपने प्रेमी के कुछ देने के विचार से आंगिक चेष्टाओं द्वारा आकर्षित करती है -

''शिवानी धीरे-धीरे उसके बालों में अपनी उंगलियाँ फेरने लगी। ... और उसने अतुल के होंठों पर अपने कापते होंठ रख दिये।''[१७]

'घुटन' की प्रतिमा ने अपने ब्लाउज का नीचे वाला बटन खोल दिया और शरीर का स्त्रीयोचित्त आकार देने वाले वस्त्र को भी गीला कर दिया। 'तीसरे आदमी' कहानी में भी उक्त समस्या का चित्रण मिलता है। इस कहानी का सतीश स्वयं को नामर्द समझता है। इसी कारण वह अपने ही अंगों से अश्लील हरकत करता है -

''पता नहीं, एक विचित्र सा संतोष मिल रहा था, उसे यह सब करने में। खोया आत्म-विश्वास जैसे लोटे रहा था।... कौन कह सकता है साला कि वह ..?''[१८]

'ऊँचाई' कहानी में भी इस विकृति का चित्रण मिलता है।

परगमन की समस्या :

मन्नूजी ने उक्त समस्या का चित्रण भी किया है। इसमें पात्र अपनी काम तृप्ति के लिए परगमन का सहारा लेते हैं।

'एक इंच मुस्कान' की अमला 'परगमन' के सन्दर्भ में सबसे निराली महिला है। जिसके जीवन में अनेक पुरुष आते हैं। जैसे मेजर-कपूर, कैलाश चावला, किशोरी, अमर तथा मेहता। परंतु अमला तृप्त नहीं हो पाती, उसकी परगमन प्रक्रिया कायम रहती है।

'एक बार और' का कुन्ज विवाहिता होने के बाद भी अपनी प्रेमिका बिन्नी से रिश्ता खत्म नहीं करता। वह तो बिन्नी से कहता है -

''बिन्नी, शादी मुझे इतना संकीर्ण नहीं बना सकेगी कि मैं अपने और सारे

सम्बन्धों को झुठला ही दूँ । शादी अपनी जगह रहेगी और मेरा तुम्हारा सम्बंध अपनी जगह।''[१९]

'स्त्री सुबोधनी' का शिन्दे विवाहित है, फिर भी 'मैं' पात्र को अपने दिल बहलाव के लिए अपनाता है । 'ऊँचाई' कहानी की शिवनी भी अपने पति से तृप्त होने के बावजूद अपने आपको समर्पित भी करती है । कारण, शिवानी अतुल को दु:खी देखना नहीं चाहती ।

इस प्रकार मन्नूजी ने अपने कथा साहित्य में आंगिक चेष्टाएं, अंग प्रदर्शन तथा परगमन विकृत्ति का मनोविशलेषणात्मक चित्रण किया है ।

लैंगिक विपर्यास वा विकृत्तियाँ :

लैंगिक विपर्यास से तात्पर्य है कि मनोलेंगिक विकास सामान्य ढंग से न होना । दूसरे शब्दों में, लेंगिक-विकृत्तियों के कारण व्यक्ति अस्वाभाविक व असामान्य रूप से कामवासना की तृप्ति करता है । लैंगिक विपर्यास के अनेक रूप माने गये हैं। जैसे - हस्तमैथुन, समलैंगिकता, मुखलिंग, विपर्यास, गुदालिंग विपर्यास, परपीड़नरति, स्पर्श आसक्ति, नग्नतादर्शन, प्रदर्शन वृत्ति, प्रतिजातीय वास्त्राहरण आसशक्त, शिशु कामुकता, पशु कामुकता आदि ।

लैंगिक विपर्यास की निम्न लिखित विकृत्तियों का चित्रण मन्नूजी ने अपने कथा साहित्य में किया है ।

- परपीड़न (Sadisim)
- स्वपीड़न रति (Musochism)
- स्पर्श आसक्ति (Froddeurism)

मनोवैज्ञानिक समस्याओं के अन्तर्गत आता यह विकृत्तियों को मैंने समस्याओं के अंतर्गत चित्रित किया है ।

परपीड़न : (Sadison) :

इस प्रकार की विकृत्ति में दूसरों को पीड़ा पहुँचा कर लैंगिक आनन्द प्राप्त

लिया जाता है। व्यक्ति अपनी हीन भाव की परिपूर्ति परपीड़नरति के द्वारा करता है। ऐसा करने से उसे आसानी में अपनी श्रेष्ठता का प्रदर्शन करने का मौका मिल जाता है।

उक्त समस्या का चित्रण मन्नूजीने 'आपका बंटी' और अन्य कहानियों में भी किया है।

बन्टी को शकुन जब नये घर ले जाती है, तब बंटी उसकी माँ को बहुत दु:खी करता है। बंटी अपनी माँ को दु:ख पहुँचाकर सन्तुष्ट होता है। शकुन इसे कहती है-

''मुझे तंग करने में, सबके बीच शर्मिन्दा करने में तुझे खास ही सुख मिलने लगा है, आज कल ! हाँ मिलता है सुख.. जरूर करूँगा शर्मिन्दा। यहाँ दूसरों के घर लाकर पटक दिया। अपना घर होगा, कोई नहीं है। अपना घर ? मैं नहीं रहता किसी के घर में।''[२०]

'घुटन' का पति अपनी कामुकता परपीड़न द्वारा ही तृप्त करता है।

स्वपीड़न रति : (M[illegible]ism) (machosism)

इस विकृत्ति में व्यक्ति को यह प्रबल इच्छा होती है कि वे अपने प्रेमाभाव के द्वारा वास्तविक या प्रतीक रूप में अपमानित या पीड़ित हों। उसे अपने को कष्ट और पीड़ा में रहकर लैंगिक आनंद का अनुभव होता है।

'आपका बंटी' उपन्यास का बंटी अपनी ममी शकुन को ही दु:खी नहीं करता बल्कि स्वयं भी एक आंतरिक यंत्रणा से गुजरता है। डॉ. जोशी और शकुन का साथ में रहना कांटों की तरह चुभता है। वह सोचता है -

''बंटी ने खिलौने फेंकने शुरु किया.... मन हुआ पर पेड़ पर से कूद पड़े। अपने हाथ पाँव तोड़ ले।''[२१]

भूखा रहकर कभी-कभी तो वह स्वयं को कष्ट देता है। अमी एक दिन बंटी को काट लेता तो है पर शकुन अमी को कुछ नहीं कहती। इस कारण वह अधिक दु:खी होता है। वह अपने आपको कष्ट देता है -

"उसने टिंचर भी नहीं लगवायी उस रात बंटी ने खाना भी नहीं खाया।"[२२]

बंटी को चोट लगना और दवा न करवाना, खाना न खाना स्वपीड़नरति है। 'बाहों का घेरा' कहानी की कम्मो इसी विकृत्ति से ग्रस्त है। वह अतृप्त रहती है। "आज उसके सामने न माँ का चेहरा उभर रहा है, न शैलेन का, न मित्तल का। सब चेहरे मिट गये, रह गई सिर्फ एक चाह-दुर्दमनीय चाह, एक ललक कि कोई हो, कोई भी, कोई भी जो उसे कस कर अपने में समेट ले, जिसकी आँखों में प्यार हो, सम्पूर्णता हो, कम्मो को पाने की पिपासा हो और अपने को पूर्ण बनाने के लिए वह कम्मों को इतना भांचे, इतना भांचे कि उसकी हड्डियाँ तक चरमरा जाएँ, उसका दमही छूट जाए।"[२३]

'अनथाही गहराईयाँ' कहानी की सुनन्दा अपने छात्र शिवनाथ को गलत समझकर डाँटती है। जिसके फल स्वरूप उसका छात्र शिवनाथ आत्महत्या कर लेता है। वस्तुत: शिवनाथ बुरा छात्र नहीं था, जब वास्तविकता का पता चलता है तो वह खुद को शिवनाथ क हत्यारिन समझती है। और वह-

"उसने काट-काटकर अपने दोनों हाथ लहू-लुहान कर दिये थे और पानी से निकाली हुई मछली की तरह बुरी तरह छटपटा रही थी।"[२४]

'एक इंच मुस्कान' उपन्यास में भी अमला तृप्ति के कारण स्वपीड़नरति की चाहत रखती दिखाई देती है - "आजकल अपने जीवन में पुरुष का अभाव मैं महसूस करती हूँ.... एक ऐसे पुरुष का जो बहशियों की तरह मुझे प्यार करे.... सब चीजों से अलग करके मुझे प्यार करे.... केवल मुझे, मेरे शरीर को, मन को, आत्मा को।"[२५]

इस प्रकार अमला स्वपीड़नरति से ग्रसित नारी है।

स्पर्श आसक्ति : (Frolteurism) :

इस विकृत्ति में लैंगिक सुख दूसरे व्यक्ति के स्पर्श मात्र से ही प्राप्त होता है। स्पर्श आसक्ति होने के प्रमुख कारण संवेगात्मक असन्तुलन, स्नायुपिक

दुर्बलता, अन्तर्द्वन्द्व, हीनता, मनोग्रंथि आदि है। सारी जिन्दगी साथ रहकर भी आदमी कितना अकेला रह सकता है और किसी का हल्का सा स्पर्श भी कैसे जिंदगी को किसी के साथ होने के एहसास और आश्वासन से भर सकता है।

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में स्पर्श आसक्ति नामक समस्या का चित्रण मिलता है। 'ऊँचाई', 'एक बार और' 'यही सच है' और 'एक ईंच मुस्कान' (उपन्यास) में उक्त समस्या का चित्रण किया गया है। 'एक बार और' की बिन्नी उसके प्रेमी कुंज के हाथों का स्पर्श विवाहित तथा अविवाहित स्थिति में भिन्न-भिन्न प्रकार की अनुभूति देता है-

''कुन्ज ने उसका हाथ अपने हाथ में लिया। यह स्पर्श होंश संभालने के बाद पुरुष स्पर्श से उसका परिचय इस स्पर्श ने ही कराया था। इसी स्पर्श ने भीतर तक गुदगुदाकर और रोम-रोम में बसकर उसे उठते यौवन का एहसास कराया था। आज एकाएक ही कितना अपरिचत हो उठा है यह स्पर्श-सर्द और निर्जीव।''[२६]

'ऊँचाई' की शिवानी जानबूझकर अपने प्रेमी अतुल को हाथों के स्पर्श से उन्मादी बनाना चाहती है। लेकिन अतुल इतना प्रभावित नहीं हो पाता तब शिवानी ...

''अतुल की इस जड़ता और क्रूरता से एक तरह से तिलमिला गई। उसे शिशिर का ख्याल आया। उसके हल्के से स्पर्श में वह कैसा उन्मादी हो जाता है।''[२७]

'यह सच है' कहानी की दीपा शारीरिक स्पर्श को ही अनुभूति का मापदंड मानती है। उसके जीवन में दो व्यक्ति आते हैं। संजय और निशीथ। निशीथ की उपस्थिति में वह संजय का स्पर्श याद करती है -

''वह क्या बिना बाहों में भरे, बिना प्यार किये यों ही चला जाता ?''[२८]

वह संजय के स्पर्श को याद करते हुए भी निशीथ से शारीरिक स्पर्श करना चाहती है। इस कारण वह सोचती है-

''एक विचित्र-सी भावना मेरे मन में उठती है कि छीना छपटी में किसी

तरह मेरा हाथ इसके हाथ से छू जाये, मैं अपने स्पर्श से उनके मन के तारों को झनझना देती है। मेरा मन करता है कि क्यों नहीं निशीथ मेरा हाथ पकड़ लेता, क्यों नहीं मेरे कन्धे पर हाथ रख देता।''[२९]

लेकिन जब निशीथ उसका हाथ पकड़ लेता है तो उसके स्पर्श के कारण दीपा के विचारों को एक दिशा मिलती है वह इसलिए कह उठती है -

''मैं सब समझ गई निशीथ, सब समझ गई। जो कुछ तुम इन चार दिनों में नहीं कर पाये वह तुम्हारे इन क्षणिक स्पर्श ने कर दिया। .... मुझे लगता है यह स्पर्श यह सुख, यही सत्य है, बाकी सब झूठ है अपने को भूलने का, भरमाने का, छलने का प्रयास है।''[३०]

यही दीपा निशीथ के स्पर्श के बाद संजय के स्पर्श को नहीं मानती। वह कहती है-

''तुम्हारे असंख्य आलिंगनों और और चुम्बनों के बीच भी एक क्षण के लिए भी तो मैंने कभी तन-मन की सुध बिसरा देनेवाली पुलक या मादकता का अनुभव नहीं किया..... उस स्पर्श को मैं भ्रम कैसे मान लूँ, जिसने मेरे तन-मन को डूबो दिया था, जिसके द्वारा उसके हृदय की एक-एक परत मेरे समने खुल गई थी।''[३१]

दीपा जब संयज के स्पर्श को पुन: प्राप्त करती है तो वह उस स्पर्श से पुनः अपने विचारों में बदलाव लाती है। वह अपने विचारों बदलती हुई और संजय की बाँहों में बंधकर महसूस करती है-

''यह स्पर्श, यह सुख, यह क्षण ही सत्य है, वह सब झूठ था, मिथ्या था, भ्रम था ....।''[३२]

इस प्रकार 'यही सच है' की दीपा स्पर्श मात्र से अपने विचारों को बदलती रहती है। एक व्यक्ति का स्पर्श भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न प्रकार की अनुभूति देता है। इस प्रकार स्पर्श आसक्ति अलग-अलग परिस्थिति में अलग-अलग प्रकार की अनुभूति कराता है।

समायोजन-प्रतिक्रियाएँ :

अहं प्रतिरक्षा क्रियातंत्र से केन्द्रित समस्याएँ :

१. समायोजी और कुसमायोजी प्रतिक्रियाएँ

२. कृत्यक निर्देशित प्रतिक्रियाएँ

- आक्रमण (Attack)
- प्रत्यागमन (Withdrawal)
- समझौता (Comeromise)

३. दमन (Repression)

४. तादात्मीकरण

५. प्रक्षेपण (Projection)

६. युक्तिसम्मतीकरण (Rudionalizution)

७. प्रतिक्रिया विधान (Reaction formuction)

८. विस्थापन (Displucement)

९. उदात्तीकरण (Sublimation)

१०. क्षतिपूर्ति (Compensution)

११. परिवर्तन (Conversion)

१२. प्रतिगमन (Rearession)

१३. स्वैरकल्पना

१४. वास्तविकता अस्वीकरण (Denial of Realisy)

इसमें से कुछ-कुछ अवस्थाओं का चित्रण मन्नूजी के कथा साहित्य में दिखाई देता है।

अचेतन मन : स्थिति का चित्रण : मन सिद्धांत :

मन क्या ? आत्मा है ? आदि ऐसे प्रश्न हैं। जिनकी सोच मनुष्य आदिकाल

से करता आया है। 'फ्रायड', 'अरस्तू' मत को स्वीकार करते हुए मन को शरीर की प्रक्रिया मानते हैं। परंतु अपने सिद्धांत को स्पष्ट रूप से समझाने के लिए वे मन को प्लावी हिमशैल का रूपक देते हैं। समुद्री हिमशैल का एक छोटा-सा (आठवाँ) हिस्सा ऊपर दिखाई देता है, किंतु उसका बड़ा हिस्सा समुद्र में होता है। ठीक उसी प्रकार मन का जो प्रकट हिस्सा है, चेतन मन, वह तो अल्पांश मात्र है। उसका बड़ा हिस्सा तो प्राय: अदृश्य-सा रहता है। इस प्रकार मन के तीन भाग माने जाते हैं।

अवचेतन, चेतन, और अचेतन :

अचेतन : (Unconscious) :

"जिस प्रकार हिमशैल का बहुत बड़ा निचला भाग पानी की गहराई में छिपा रहता है, जिसे हम देख नहीं सकते, उसी प्रकार अचेतन हमारे हमारे मन वह निचला भाग है, जहाँ ऐसी स्मृतियाँ संचित होती है, जिनका पुन: स्मरण कठिन ही नहीं वरन् असम्भव होता है। इन स्मृतियों का पुन: स्मरण या तो कुछ समय बाद स्वचालित रूप से हो जाता है या सम्मोह और मुक्त साहचर्य आदि विधियों द्वारा कराया जा सकता है।"[३३]

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में अचेतन मन : स्थितियों का चित्रण मिलता है।

'क्षय' कहानी की कुन्ती अपने पापा की बीमारी से वह शारीरिक व मानसिक तकलीफ झेलती है। उसका निम्न लिखित कथन उस मानसिक अचेतन अवस्था का है।

"हे भगवान ! अब तो तू पापा को उठा ले ! मुझसे बर्दाश्त नहीं होता। मैं टूट चुकी हूँ।"[३४]

'बाँहों का घेरा' की कम्मो काम अतृप्ति पात्र है। किसी को बाँहों में भरकर अपने को उसमें लय कर देने की और उसका सब कुछ पा लेने की आतृप्त मन की चाहत है। इसी कारण अचेतन मनसे -

''कम्मो को पूरा चाँद कभी अच्छा नहीं लगा। पता नहीं लोगों को उसमें क्या सौंदर्य दिखाई देता है। जो अपने आप में पूर्ण है, जिसे किसी की उपेक्षा नहीं, कितना संतुष्ट है वह छी, और वहाँ रस नहीं वहाँ सौंदर्य कैसा ? दूज का चाँद पतली अर्ध-चन्द्राकार रेखा-मानो किसी को कस लेने के लिए बाँहां का घेरा बनाकर बैठा हो।''[३५]

कम्मो की बाहों में कस जाने की इच्छा अचेतन मनके द्वारा विचारों के ही माध्यम से प्रकट नहीं होती बल्कि क्रियात्मकरूप तकिये को बाहों में भर लेने के द्वारा पायी जाती है।

'ऊँचाई' कहानी की शिवानी भी अचेतन अवस्था की शिकार है। चेतन रूप में अतुल के साथ रहने पर भी अचेतन रूप से शिशिर के साथ रहती है। शिवानी अपने पति को कहती है -

''तुम्हारे सिवा और कोई बात ही मन में नहीं थी। शरीर पर चाहे वह छाया हुआ हो, पर मन पर तुम केवल तुम ही छाए हुए थे।''[३६]

इस प्रकार शिवानी की अचेतन अवस्था का चित्रण हुआ है।

'कील और कसक' की रानी, शेखर में भरा-पूरा स्वस्थ सुन्दर चेहरा देखती है और तभी उसके सामने चेचक के दाग से भरा एक काला सा चेहरा उभर आया कैलाश का। इस तरह शेखर में कैलाश का चेहरा दिखना अचेतन मन का प्रतीक है। रानी एक जगह पर कहती भी है-

''सच पूछो तो जीजी, क्या रखा है ब्याह में भी ? एक बन्धन ही तो है, जी का जंजाल ! बिना ब्याह के तो कैसी मस्ती रहती, नहीं तो पचास झंझट।''[३७]

रानी के अचेतन मन में शेखर के प्रति प्यार एवं विवाह के कटु अनुभव उक्त कथन से उजागर होते है। शेखर का प्रेम रानी में केवल कथन से परिलक्षित नहीं होता बल्कि शेखर के विवाह के बाद रानी की समस्त चेतना क्रियाएँ अचेतन में तब्दील हो जाती हैं -

''रानी तरकारी काटने बैठी तो उँगली पर ही चाकू चल गया चुल्हा जलाया तो जाने कैसे हाथ जल गया, पर उसे जलन महसूस हीं नहीं हुई ... तवा चढ़ाना

वह भूल गयी, रोटी बेलकर एकदम चुल्हे में डाल दी।''[३८]

उँगली कटना, हाथजलना, रोटी को चूल्हे में डाल देना यह अचेतन अवस्था के लक्षण है। 'आप का बंटी' उपन्यास में भी इस मनोवैज्ञानिक समस्या का चित्रण किया है। बंटी के चरित्र के द्वारा हम बार-बार अनुभव करते हैं कि बंटी बार-बार अचेतन अवस्था के कारण ही अपनी मम्मी से गलत व्यवहार करता है। जब उसकी ममी डॉ. जोशी के साथ शादी करने के कारण बंटी को कम प्यार मिलता है, तो बंटी अचेतन अवस्था में आ जाता है -

''तैयार होते-होते बंटी के दिमाग में यही एक बात घूमती रही। ममी ने उसे एक बार भी प्यार नहीं किया। पहले कभी वह ममी के गाल पर किस्सू देता तो फिर ममी बदले में ढेर सारे किस्सू देती... बाहों में भरकर खूब-खूब प्यार करती।''[३९]

यहाँ लेखिका ने बंटी का माँ के प्रति प्रेम में अचेतन अवस्था का चित्रण किया है। जब शकुन डॉ. जोशी के घर रहने चली जाती है तो बंटी अपने घर को भूल नहीं पाता, इसी कारण भी वह अचेतन अवस्था का शिकार होता है। जैसे -

''पता नहीं, क्या है, वह कहीं भी जाए, उसका अपना घर साथ-साथ चलता है। बाथरूम, बाल्टी, नल.... आँख मीचकर भी अपने घर में जिस तरह चल सकता था, यहीं आँख खोलकर भी उस तरह नहीं चल पा रहा है।''[४०]

आगे भी बंटी के अचेतन मन की अवस्था का चित्रण किया है। बंटी ने जो-जो कहानियाँ पढ़ी थी, उस कहानियों में डरावनी बातें, विचित्र स्थितियाँ, जब तक पापा थे, पुराना घर था, तब तक अच्छी बातें लग रही थीं, लेकिन पापा से रिश्ता टूट जाना और ममी के डॉ. जोशी के साथ होने से अकेलेपन और अजनबीपन की स्थितियाँ उसके अचेतन मन से उभरकर जाने लगी -

''सारा घर अंधेरे में डूब गया। बंटी के मन का दु:ख और गुस्सा धीरे-धीरे डर में बदलने लगा। केवल डर ही नहीं, एक आतंक कैसी कैसी शक्ले उभरने लगी, उसी अंधेरे में। उसने कसकर आँखें मींची ली। पर अजीब बात है,

बन्द आँखों के सामने शक्ले और भी साफ हो गई लपलपाती जीभ के राक्षस.... उल्टे पंजे और सींगों वाला सफेद भूत, तीन आँखोंवाली चुड़ैल, जादुई नगरी के नाचते हुए हड्डियाँ के ढाँचे सब उसके चारों ओर नाच रहे है- धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ रहे हैं।''[४१]

'स्वामी' उपन्यास में भी अचेतन मन: स्थिति का वर्णन हुआ है। घनश्याम के निम्नलिखित कथन से मीनी अचेतन अवस्था में पहुँच जाती है और उसके आँखों के सामने नरेन का प्रेम सजीव हो उठता है-

''कम से कम जमीन पर तो मत सोओ.... चलो उठाकर उधर लेटा दूँगा।''[४२]

दमन : (Repression) :

अचेतन के संदर्भ में फ्रायड़ के द्वारा उठाये गई दमन की बात में बल है क्योंकि अनुचित दमन जीवन के स्वस्थ विकास में बाधक सिद्ध होता है, और यही दमन कालान्तर में विस्फोट विकृत्तियों का रूप धारण कर लेता है। 'कोलमैन' (Coleman) के अनुसार -

''दमन एक ऐसा अहं पतिरक्षा क्रियातंत्र (Ego Defence Mechanism) है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने कष्टदायक एवं भयानक विचारों और इच्छाओं को चेतन की परिधि से इस प्रकार निकाल देता है, उसे यह ज्ञान ही नहीं हो पाता कि यह प्रतिक्रिया किस प्रकार हो गई।''[४३]

'इद' का काम केवल इच्छाएँ और विचार उत्पन्न करना है, भले ही ये अनैतिक अथवा असम्भव ही क्यों न हो ! अहं और पराहम् ऐसी इच्छाओं और विचारों को चेतन स्तर पर अभिव्यक्त होने की अनुमति नहीं देते और इन्हें अचेतन और अवचेतन के बीच स्थित अंत : मानसिक सेन्सर (Endo-psychic censor) की अवसीमा के वापस अवचेतन में ढकेल देते हैं। यही कारण है कि दमन की प्रक्रिया का ज्ञान व्यक्ति के चेतन-स्तर पर नहीं हो पाता।

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में भी दमन समस्या का चित्रण मिलता है।

'आपका बंटी' उपन्यास का बंटी, ममी एवं डॉ. जोशी को रात में आपत्तिजनक स्थिति में देखता है। उस घटना को देखने से वह दमन का स्वरूप धारण कर लेती है। और वह घटना अनेक रूप में बंटी के सामने आती है।

"फिर बोर्ड पर बोतल एकाएक डॉक्टर साहब की टाँगो के बीच आकर उलटी लटक गई।"[४४]

आगे भी लेखिकाने इस समस्या का चित्रण किया है। 'आपका बंटी' का बंटी अपनी माँ शकुन से चाँटा खाने पर क्रोधावस्था में आ जाता है। वह चाहता है -

"पेड़ पर से कूद पड़े। अपने हाथ-पांव तोड़ ले।"[४५]

इस प्रकार वह अपनी आक्रामक प्रवृत्तियों का दमन कर लेता है। 'एक ईंच मुस्कान' की अमला काम अतृप्त नारी है वह अपनी काम सम्बन्धी प्यास का दमन करती रहती है। 'एक बार और' कहानी का कुंज मधु से शादी करने के बाद प्रेमिका बिन्नी से संबंध बनाये रखना चाहता है। परन्तु -

"झटके से उठकर कहता है 'व्ही आर मैरिड बिन्नी व्ही आर मैरिड।"[४६]

'कील और कसक' कहानी रानी शेखर के प्रति समार्पित है, लेकिन शेखर की उदासीनता के रानी समग्र इच्छाओं का दमन करती है। फलत: उसकी दमन इच्छाओं विकराल रूप धारण कर लेती है। रानी ने अपना हाथ शेखर के शरीर एक प्रकार से सटा सा दिया - "ले पकड़, पकड़ तो, हाथ।... अब पकड़ता क्यों नहीं, असल मरद बच्चा है तो पकड़कर ही दिखा दे।"[४७]

कभी-कभी शारीरिक हीनता के कारण व्यक्ति को इच्छा का दमन करना पड़ता है। 'तीसरा आदमी' का सतीश को संतान से वंचित होने के कारण स्वयं को नामर्द समझने लगता है। इस कारण उसके मनमें यह बात घर कर गयी थी-

'पलकें भी चुमेगा तो उसे अपने प्रेमी की याद आयेगी। वह इसे सहन नहीं कर सकेगा।'

यह सोचकर सतीश खुद काम इच्छा का दमन करता है। 'चश्मे' कहानी

की नायिका शैल टी.बी से पीड़ित होनेपर अपनी समग्र इच्छाओं का दमन करती है। जिसके फल स्वरूप उसमें जीने के प्रति आकर्षण, प्रेम खत्म हो जाता है। और मृत्यु की ओर आगे बढ़ती है। 'अनचाही गहराइयाँ' में उक्त समस्या चित्रण मिलता है। इस कहानी का शिवनाथ अपनी टीचर सुनन्दा के गलतफहमी के शिकार होने के कारण अपमानित होकर आत्महत्या कर लेता है, क्योंकि उसके अचेतन मन में यह बात दमित थी कि वह सुनन्दा के प्रेम, स्नेह, विश्वास को खोकर वह एक दिन भी जिन्दा नहीं रह सकेगा। 'संख्या के पार' के बाबा, अपनी लड़की के प्रति क्रोध का दमन करते हैं। कभी-कभी व्यक्ति अत्यधिक अपनी भावनाओं को खो बैठता है। बाहों का घेरा की नायिका काम अतृप्त नारी है और अपनी भतीजी इन्दु के मंगेतर शम्भी के आनेपर वह उसके साथ सम्बन्ध बांधना चाहती है।

''पिछले छ: वर्षों से वह जिस प्रकार अपने को नियोजित करती आ रही थी कर गई और पड़ी रही।''[४८]

'ईसा के घर इन्सान' में भी उक्त समस्या का चित्रण मिलता है। इसमें नई सिस्टर एंजिला अपनी समग्र इच्छाओं का दमन करती रही परंतु यह दमन सफल नहीं होता और प्रत्यक्ष रूप में उभर आता है -

''मैं इस चर्च में घुट-घुटकर न रहूँगी।.... मुझे कोई रोक सकता, जहाँ मेरा मन होगा, मै जाऊँगी।''

उसका भागजाने का विचार और भागन की प्रक्रिया भी उसके दमित इच्छा का ही परिणाम है। इस प्रकार मन्नू जी के कथासाहित्य में दमन समस्या को चित्रित किया गया है।

अन्त: क्षेपण : (introjection)

अन्त: क्षेपण एक मानसिक प्रक्रिया है। मिलर के अनुसार-

''अन्त: क्षेपण एक प्रवृत्ति है जिसमें व्यक्ति अपने वातावरण के गुणों को अपने व्यक्तित्व में सम्मिलित करता है।''[५०]

इसका मूल लक्षण है दूसरे व्यक्ति को अपना ही एक अंग मानना। इस

अवस्था का चित्रण मन्नूजी ने कहानियों एवं उपन्यास व कहानियों में देखने को मिलता है । अन्तः क्षेपण द्वारा व्यक्ति विपरीत तथा भयप्रद परिस्थितियों से समन्वयता स्थापित करने का प्रयत्न करता है । 'आपका बंटी' उपन्यास में शकुन डॉ. जोशी को संपूर्ण रूप से अपना अभिन्न अंग समझने लगती है । 'एक इंच मुस्कान' की अमला, अमर को अपने जीवन का एक अभिन्न अंग समझने लगती है ।

कहानियों में भी इस मानसिक अवस्था का चित्रण मन्नूजी ने किया है । सजा की आशा (मैं) विपरीत परिस्थितियों से ही समन्वयता स्थापित करने की कोशिश करती है । 'कील और कसक' की नायिका रानी शेखर को स्वयं में आत्मसात करने का अनुभव करती है । इस प्रकार अन्तः क्षेपण एक मानसिक प्रक्रिया है ।

प्रक्षेपण : (Projection) कौल मैन के अनुसार :

प्रक्षेपण की परिभाषा :

''प्रक्षेपण ऐसा अहं-प्रतिरक्षा क्रियातंत्र है जिसके द्वारा हम अनजाने तौर पर (क) अपनी न्यूनताओं, त्रुटियों और कुकृत्यों का दोष दूसरों पर थोप देते हैं, (ख) अपने अस्वीकार्य आवेगों, विचारों और इच्छाओं को दूसरों पर आरोपित कर देते हैं ।''[५१]

मन्नूजी ने उक्त समस्या का चित्रण अपनी कहानियाँ व उपन्यास में किया है । 'आपका बंटी' में अजय-शकुन की यही स्थिति है ।

''समझौते का प्रयत्न भी दोनों में एक अंडरस्टैंडिंग पैदा करने की इच्छा से नहीं होता था वरन् एक-दूसरे को पराजित करके अपने अनुकूल बना लेने की आकांक्षा से । .... भीतर ही भीतर चलनेवाली एक अजीब ही लड़ाई थी वह भी, जिसमें दम साधकर दोनों ने हर दिन प्रतीक्षा की थी कि कब सामने वाले की साँस उखड़ जाती है और वह घुटने टेक देता है, जिससे कि फिर वह बड़ी उदारता और क्षमाशीलता के साथ उसके सारे गुनाह माफ करके उसे स्वीकर करले ।''[५२]

इस प्रकार दोनों ने प्रक्षेपण को आधार बनाकर जिंदगी के कितने ही साल ऐसे ही खत्म कर दिये। बंटी में भी इसी प्रकार का गुण विद्यमान था। बंटी अपनी माँ ऊपर कई जगह आरोपण करता दिखाई देती है। शकुन जब डॉक्टर जोशी से बात करती है, तो बंटी कहता है-

'तुमने मेरे कवर क्यों नहीं चढाए। कल सज्रा नहीं मिलेगी मुझे ?' जब डॉक्टर जोशी प्रेम से बंटी को पूछते हैं तो बंटी डॉ. जोशी पर भी प्रक्षेपण करता दिखाई देता है-

''हाँ, हो रहे हैं नाराज, आपका क्या जाता है ? जब देखों तब आकर बैठ जायेंगे या मम्मी को ले जायेंगे। बड़ी अपनी मोटर की शान लगाते हैं। अब आकर बैठ गये तो मम्मी कवर नहीं चढ़ा सकी न ? और ममी कह नहीं सकती थी कि उन्हें बंटी का काम करना है।''[५३]

'कील और कसक' कहानी की रानी अचेतन मन से चाहती है कि शेखर उसका हाथ पकड़े परंतु शेखर ने हाथ नहीं पकड़ा तो अपनी त्रुटिवों का शेखर पर प्रक्षेपण करती है - ''पर रानी थी कि रोए चली जा रही थी। उसने हाथ शेखर के शरीर से सटा दिया था, फिर भी उसने नहीं पकड़ा नामर्द कहीं का।''[५४]

'एक इंच मुस्कान' में अमला अपने अचेतन अवस्था के कारण अपनी इच्छाओं को अमर पर थोपती नजर आती है।

विस्थापन की समस्या : Disgplacement :

कोलमैन के अनुसार विस्थापन का अर्थ -

''किसी व्यक्ति अथवा वस्तु से सम्बन्धित संवेग, प्रतीकात्मक अर्थ (Symbolic meaning) अथवा स्वैरकल्पा (Fantasy) को किसी दूसरे व्यक्ति अथवा वस्तु पर प्रस्थापित कर देना है। विशेषत: इस क्रियातंत्र द्वारा व्यक्ति अपने उत्तेजित संवेगों को किसी ऐसे व्यक्ति अथवा वस्तु पर विसर्जित कर देता है जो अपेक्षा कृत निष्प्रभावी और कम खतरनाक होता हे।''[५५]

मन्नूजी के कथा साहित्य में विस्थापन की समस्या का चित्रण भी मिलता

है। 'रेत की दीवार' कहानी का पात्र रवि क्रोधित होता है आज की शिक्षा व्यवस्था पर, फैलते भ्रष्टाचार और बढ़ती जाती बेकारी पर, उसका यह संवेग अपने पिताकी ओर स्थानान्तरित है- तथा ''एकाएक बाबू के लिए उसके मन में कोप उफनने लगा। क्यों नहीं बिठल्ले चाचा की तरह उन्होंने भी इन्टर के बाद ही उसे काम पर लगा दिया ? क्यों उसे इन्जीनियरिंग के लिए भेजा ?''[५६]

'तीसरा हिस्सा' के शेरा बाबू अपनी पत्नी एवं पुत्र की आवारागर्दी को लेकर काफी चिंतित नजर आते हैं।

''... ग्यारह बज रहे हैं अभी तक साहब-जादे का पता नहीं है।.... सारे दिन आवारागर्दी करना, रात को देर सवेर जब भी मन हुआ आ गए टाँग फैलाकर सोने के लिए।..... और वे माँ हैं, नौ बजे से ही भैंस जैसी पसरी पड़ी है।.... ठीक है, सारी कोशिशों के बावजूद पत्रिका वे फिर से नहीं निकाल पा रहे हैं।... कोई गिनता ही नहीं। इनको घर में, जैसे वे मिट्टी का लोंदा हों।''[५७]

इस प्रकार शेराबाबू पुत्र से पत्नी ऊपर, पत्नी ऊपर से पत्रिका पर तथा पत्रिका परसे खुद पर आते हैं। इस तरह विचार एक दूसरे को थोपते हुए आगे बढ़ते हैं। यही प्रक्रिया को विस्थापन की स्थिति कहते हैं। आगे भी शेरा के चरित्र में इस अवस्था का चित्रण मिलता है। शेराबाबू - ''ये स्साली बीबी है। बीबी और औरत के नाम पर कैसी-कैसी लफ्फाज्जिवाँ झाड़ रही है- सब बकवास। एक वो प्रसाद जी हो गए ... ऐसी एक भी घुड़की खा लेते तो सारी श्रद्धा-वद्धा पछे के रास्ते निकल जाती।''[५८]

इस पकार विस्थापन की समस्या का चित्रण 'तीसरा हिस्सा' कहानी में मिलता है। 'यही सच है' कहानी में भी उक्त समस्याका चित्रण मिलता है। दीपा निशीथ के बारे में सोचती है, लेकिन शीघ्र ही उसके विचार संजय की सोच में स्थनांतरित हो जाते हैं।

''यह निशीथ कुछ बोलता क्यों नहीं ? उसका यो कोने में दुबक्कर निर्विकार भाव से बैठे रहना मुझे कतई अच्छा नहीं लगता ... संजय की याद आने लगती है। इस समय वह यहाँ होता तो उसका हाथ मेरी कमर में लिपटा होता।... सोते

समय रोज की तरह मैं आज भी संजय का ध्यान करते हुए ही सोना चाहती हूँ, निशीय है कि बार-बार संजय की आकृति को उठाकर स्वयं आ खड़ा होता है।''[५९]

'आपका बंटी' में भी उक्त समस्या का चित्रण मिलता है। जब डॉक्टर जोशी ने बंटी से कहा था कि शाम को तुम्हे घुमाने ले जाएंगे, लेकिन हार्ट का पेशेन्ट आने की बजह से वे नहीं आ पाते, इस कारण बंटी डॉक्टर का गुस्सा अपनी चीज-वस्तुओं पर निकालता है -

''गुस्से से भन्नाते हुए उसने अलमारी खोली। बस इसी पर तो उसका अधिकार है। एक-एक खिलौना निकालकर फेंक दिया, एक-एक कपड़ा कमरे में छितरा दिया। ... जरा ममी की पकड़ ढीली हुई कि छिटककर उठा और रंगों की शीशियों वाला डिब्बा उठाकर दे मारा खड़खड़ जन्नऽऽ...कुछ शीशियाँ साबुत लुड़क गई, कुछ चकनाचूर हो गई।''

सामान्य रूप से विस्थापन की समस्या का चित्रण कहानियाँ एवं उपन्यासों में मिलता है। मन्नू भंडारी जी का कथा साहित्य इसमें अपवाद नहीं है।

क्षतिपूर्ति (Compensution) :

क्षतिपूर्ति की परिभाषा देते हुए किस्कर लिखते हैं -

''हीनता और अपर्याप्तता की भावनाओं से सम्बन्धित दुश्चिन्ता पर लोगों द्वारा काबू पाने की सामान्य विधियों में से एक विधि क्षतिपूर्ति है। कभी-कभी व्यक्ति किसी ऐसी शारीरिक हीनता की क्षतिपूर्ति करता है जो वास्तविक होती है। किन्तु बहुधा यह क्षतिपूर्ति ऐसी मानसिक हीनता के प्रति होती है, जो केवल कल्पना की उपज होती है।''[६१]

क्षतिपूर्ति के बारे में कॉलमेन कहते हैं -

''क्षतिपूर्ति-प्रतिक्रियाएँ, हीनता और अपर्याप्तता की ऐसी भावनाओं के प्रति सुरक्षात्मक उपाय है जो वास्तविक अथवा काल्पनिक व्यक्तिगत दोषों अथवा दुर्बलताओं के अलावा विफलताओं और प्रतिरोधों के कारण उत्पन्न होती

है ।''[६२]

'आपका बंटी' उपन्यास की शकुन वैवाहिक जीवन की असफलता की पूर्ति, विभागाध्यक्ष एवं प्रिन्सीपल हो जाने में पूरी करती है, तो अजय अपने वैवाहिक जीवन की क्षति मीरां से शादी करके धीर नामक सुंदर बच्चे के पिता बनकर पूर्ति करता है । 'एक ईंच मुस्कान' की अमला वैवाहिक जीवन की असफलता अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व के सहारे एवं पुरुष साहचर्य के द्वारा पूर्ति करती है । इस प्रकार क्षतिपूर्ति माध्यम से व्यक्ति अपनी हीनता का बचाव करता है ।

मनोवैज्ञानिक ग्रंथियों का मानवजीवन पर प्रभाव :

इडिपस ग्रन्थि : (Oedipus complex) :

इडिपस शब्द युनानी पुराण कथाओं से मिलता है । फ्रायड ने यह शब्द इन्हीं पुराण कथाओं से लिया है । उसके अनुसार व्यक्ति सिद्धान्त का यह एक महत्वपूर्ण बात है । बहुधा यह देखा गया है कि यदि तुम इस प्रकार अपनी जननेन्द्री छुओगे तो इसे काट दिया जाएगा । इस चेतावनी से वह माँ की ओर उन्मुख होता है, परंतु वह देखता है कि माँ पर पिता का अधिकार है । इस कारण वह पिता का अधिकार हटाना चाहता है । संक्षेप में फ्रायड के अनुसार -

''मनुष्य प्राय: विरोधी लिंग वाले व्यक्तियों की ओर आकर्षित होता है ।''[६३]

दूसरे मनोविश्लेषक श्री जेम्स ड्रेवर का मानना है -

''यह वह ग्रंथि है जिससे लड़का अपनी माँ पर उसी प्रकार अधिकार रखना चाहता है जैसा पिता का अधिकार होता है, साथ ही साथ वह अपने पिता को रास्ते से हटाना चाहता है ।''[६४]

मन्नूजी के कथासाहित्य में उक्त मनोग्रंथि का चित्रण मिलता है । 'आपका बंटी' इसका श्रेष्ठ उदाहरण है । बंटी इस ग्रंथि से प्रभावित है । वह पूरी तरह अपनी ममी शकुन पर निर्भर है -

''ममी चलेगी तो चलूँगा ।''[६५]

एक जगह पर वह शकुन को कहता है -

''ममी , मैंने तो पापा से कह दिया कि ममी के बिना मैं कहीं जा ही नहीं सकता .... ममी मैं तुम्हें कभी-कभी नहीं छोड़ूँगा... मत रोओ ममी-मत रोओ।''[६६]

जब डॉ. जोशी शकुन के घर मिलने आता है तो बंटी बहुत को दु:ख होता है, वह सोचता है कि क्यों आते हैं यहाँ इतना ? जब जब डॉ. जोशी आते हैं बन्टी बहुत घुटन महसूस करता है । बन्टी हमेशा डॉ. जोशी की उपेक्षा ही करता है । एक जगह पर शकुन बन्टी को कहती है कि 'नमस्ते करो डॉ. साहब को' तब बन्टी दोनों हाथ जोड़कर ऐसे नमस्ते करता है, मानो कह रहा हो जान बक्षी । जब तक डॉ. जोशी से शकुन रिश्ता नहीं था तब तक- ममी का हर काम, इस घर का हर काम बंटी के लिए ही होता था । अब सब कुछ डॉ. जोशी के लिए होने लगा है । और बंटी का व्यक्तित्व धीरे-धीरे आक्रमक होता जाता है । वह ममी से अत्याधिक प्रेम करने की बजह से डॉ. जोशी को नहीं सह पाता । एक दिन वह देखता है -

''डॉक्टर साहब सोफे पर ममी के बगल में बैठे हैं ! एकदम सटकर । उनका एक हाथ ममी की पीठ से होता हुआ ममी के कन्धे पर रखा है । दूसरे हाथ से वे ममी को एक सुन्दर सी शीशी सुंघा रहे हैं । ... बंटी एक क्षण वहाँ का नहीं खड़ा रहा । उसे अजीब सी बेचैनी होने लगी ।... डॉ. साहबने शीशी अपनी उँगलियों पर उल्टी और ममी की साड़ी के पल्ले पर मलने लगे । बन्टी का मन हुआ खींचकर डॉ. साहब को अलग कर दे । उसके भीतर कुछ खोलने लगा।''[६७]

डॉ. जोशी का ब्याह शकुन से हो जाने के बाद बंटी डॉ. जोशी को पिता के रूप में स्वीकार नहीं कर पाता । वह हरदम यह सोचकर दु:खी होता है कि डॉ. जोशी ने मेरी ममी को मुझसे छीन लिया है । जब ममी के प्रति यह प्रेम अत्यधिक हो, असह्य हो जाता है, तो वह डॉ. डॉ. जोशी का घर छोड़कर अपने पापा अजय के पास जाने का निर्णय लेता है । इस प्रकार जो भी दु:ख, यातना

भुगतता है, उसका कारण इड़िपस भाव ग्रंथि ही है।

अहं की समस्या (Ego) :

मन का सिद्धान्त और व्यक्तित्व संरचना के अंतर्गत फ्रायड ने मन के मुख्यत: दो पक्ष बतलाये है -

(१) 'मन' का गत्यात्मक पक्ष (Dynamic Aspect of mind)

(२) 'मन' का स्थलाकृतिक पक्ष (Topological Aspect of mind)

'मन' का गत्यात्मक पक्ष के अंतर्गत तीन अंगों की चर्चा की गई - (१) इदम (Id) (२) अहं (Ego) (३) पराअहं (Superego)

अहं की समस्या :

"फ्रायड का इगो से तात्पर्य आत्म (Self) या चेतन बुद्धि इगो का संबंध एक और बाहय वातविकता से होता है। तथा दूसरी ओर 'इड' से होता है। यह व्यक्ति की इच्छाओं की संतुष्टि, सामाजिक और भौतिक वास्तविकता के संदर्भ में करता है। यह इड़ की इच्छाओं और भौतिक जगत की वास्तविकता के मध्य समायोजनकर्ता का कार्य करता है।"[६८]

अहं की उत्पत्ति :

शिशु की आयु बढ़ने के साथ-साथ वह वातावरण की वास्तविकताओं की ओर उन्मुख होने लगता है। आयु बढ़ने के साथ-साथ उसमें मेरा और मुझे जैसे प्रत्ययों का अर्थ स्पष्ट होने लगता है। धीरे-धीरे वह समझने लगता है कि कौन सी वस्तुएं उसकी हैं और कौनसी अन्य लोगों की हैं। इगो इड़ का ही एक विशिष्ट अंश है जो बाहय वातावरण के अभाव के कारण विकसित होता है। चूंकि इड़ वंशानुगत होता है। अत: वंशनुगत पदार्थों पर वातावरण के प्रभावों के परिणाम स्वरूप इगों का विकास होता है, वास्तव में अहं मात्र प्रवृत्ति नहीं है, वह शारीरिक गुण विशेषताओं से युक्त संस्था है। द्वन्द्व, दमन, विस्थापन , संप्रेषण, कल्पना, प्रदोषण, प्रतिक्रिया अन्य अभिव्यक्ति, तादात्मय, सम्पूर्तिकरण बौधिकरण,

प्रतिगमन, चयनात्मक, विस्मरण, नकारी वृत्ति उन्नयन तथा स्वप्न क्रिया इसी के अंतर्गत आते हैं। अहं की यह प्रतिक्रियायें अचेतन स्तर पर कार्य करती हैं। यह अहं की प्रथम और सुरक्षात्मक दिशा कहा गया है। अहं की दूसरी दिशा, जिसे माध्यमिक क्रियाये कहते हैं, जिसके अंतर्गत तर्कपूर्ण विचार किया। प्रत्यक्षीकरण, ध्यान देना, याद रखना, ज्ञान प्राप्त करना तथा स्थानान्तरण की क्रियायें आती हैं।

मन्नू भंडारी के कथासाहित्य में इन दोनों दिशाओं का चित्रण मिलता है।

औचित्यस्थापन की समस्या :

व्यक्ति अपने दोषों, त्रुटियों और असफलता को छिपाने के लिए तार्किक प्रपंच करता है। औचित्य स्थापन स्वाभिमान कायम रखने की इच्छा से प्रेरित दोषपूर्ण आत्मरक्षात्मक चिन्तन है। इस प्रकार का वर्णन मन्नूजी ने 'ऊँचाई' 'कील और कसक', 'मजबूरी' आदि कहानियों में तथा 'आपका बंटी' और 'एक ईंच मुस्कान' उपन्यास में मिलता है। 'ऊँचाई' कहानी की नायिक शिवानी अपने को अतुल के समक्ष समर्पित करने के बाद पति के पूछे जाने पर तर्क करती है -

''यदि हमारे सम्बन्धों का आधार इतना छिछला है, कमजोर है कि एक हल्के से झटके को भी संभाल नहीं सकता तो सचमुच ही उसे टूट जाना चाहिए।''[६९]

जब शिवानी अतुल से प्रेम करती है, इसकी जानकारी शिशिर को होती है, तो वह शिवानी को छोड़कर चला जाता है। लेकिन शिवानी के प्रपंची तर्कों के माध्यम से फिरसे अपने पति को अपना बनाने में कामयाब होती है। वह कहती है -

''ऐसी बात भी तुम्हारे मन में क्यों आती है ? अतुल अपनी सीमा जानता है। जो उसका नहीं, उसे पाने की लालसा भी कभी नहीं करता। अपने को कष्ट देना वह जानता है, दूसरे के लिए कष्ट का कारण बनना उसका स्वभाव

नहीं। और मेरे दायित्व की बात उठाकर व्यर्थ ही क्यों अपने को नीचे गिरा रहे हो ? मेरे जीवन में तुम्हारा जो स्थान है, उसे कोई नहीं ले सकता, लेना तो दूर, उस तक कोई पहुँच नहीं सकता। किसी के कितनी ही निकट चली जाऊँ, चाहें शारीरिक सम्बन्ध भी स्थापित कर लूँ, पर मन की जिस ऊँचाई पर तुम्हें बिठा रखा है, वहाँ कोई नहीं आ सकता ; किसी से उसकी तुलना करने में भी तुम्हारा अपमान होता है।''[७०]

इस प्रकार वह औचित्यस्थान करके अपने पति को समझाने में सफल होती है। 'नकली हीरे' में भी उक्त समस्या का चित्रण मिलता है। 'नकली हीरे' कहानी की नायिका सरन वैवाहिक जीवन की असफलता अपनी बहन को न बताकर ऐसा तर्क करती है -

''ये कहाँ घर रह पाते हैं ? काम ही इतना बढ़ा लिया है कि मरने तक को फुर्सत नहीं मिलती। अभी-अभी तीन नई मिले बम्बई में और सेट की है। मैं तो कहती हूँ क्या होगा इन सबका ? जो है वही दो पीढ़ी तक खत्म नहीं होने का, पर ये माने तब न।''[७१]

इस प्रकार वह अपनी तर्क शक्ति द्वारा वह बहन को पूछने पर उक्त तर्क पूर्ण विधान का प्रयोग करती है। 'मजबूरी' कहानी की रमा जब अपने लड़के को 'अम्मा' के पास से शहर ले जाती है तो अम्मा को बहुत दु:ख होता है। जब मुहल्ले में औरतों के पूछे जाने पर वह (अम्मा) कहती है-

''अब यह कोई बच्चे पालने की उमर है भला ! जिसकी थी उसीको सौंपी। बुढ़ापा है कुछ भजन पूजन ही कर लूँ। उसके मारे तो मेरा सब कुछ छूट गया था।''[७२]

अम्मा ने उसके पूर्व ऊँची-ऊँची बातें की थी कि वह लड़का (बेटु) हमेशा मेरे पास ही रहेगा। लेकिन जब उसको रमा ले कर चली जाती है तो उपर्युक्त कथन द्वारा 'औचित्य स्थापन' करती हैं। 'कील और कसक' कहानी में भी इस समस्या का चित्रण हुआ है। इस कहानी की रानी चाहती है कि शेखर उसका हाथ पकड़े, लेकिन वह ऐसा नहीं करता। शेखर की उपेक्षा से तिलमिलाकर जोर-जोर

से रोती है, लेकिन जब सब लोग पूछते हैं कि शेखर ने तुम्हारा हाथ पकड़ लिया ? तो वह तर्क करती है -

''नहीं, हाथ पकड़ तो कैसे ले, कोई तमाशा है ? और वह फूट-फूटकर रोने लगी।''[७३]

औचित्य स्थापन की समस्या का चित्रण 'आपका बंटी' व 'एक ईंच मुस्कान' उपन्यास में भी मिलता है। बंटी बस से आता है तो अमी-जोत कार में आते हैं। लेकिन बंटी को यह सुविधा उपलब्ध न होने पर दोस्तों द्वारा पूछे जाने पर -

''क्यों रे बंटी, तू गाड़ी में क्यों नहीं आता यार ? (तब) क्यों जाऊँगा गाड़ी में ? घर से निकलो और सीधे स्कूल पहुँच जाओ। न किसी से बोल सको न कुछ। बस में कितना मजा आता है। गाडी में तो मैं शाम को घूमता हूँ।''[७४]

'एक ईंच मुस्कान' की 'अमला' परित्यकता महिला है। इसी वजह से वह कहती रहती है -

''पति के अतिरिक्त भी संसार में बहुत कुछ ऐसा होता है जो नारी जीवन को पूर्ण बना सके।''[७५]

इस प्रकार अमला अपने असफल दाम्पत्य जीवन के औचित्य स्थापन के द्वारा स्वाभिमानी जीवन जीने की कोशिश करती है। दूसरा उदाहरण यह है कि जब अमर और अमला एक दूसरे के निकट आते हैं तब रंजना इस सम्बन्ध को सह नहीं पाती है, तब अमर अपना औचित्य स्थापन करने के लिए यह तर्क करता है -

''हम दोनों मित्र हैं, मात्र मित्र।... तुम खुद ही सोचो इसके अतिरिक्त हमारे सम्बंध ही क्या हो सकते हैं ? मैं उसे क्या चाह सकता हूँ।''[७६]

इस प्रकार मन्नूजी के कथा साहित्य में औचित्य स्थापना की समस्या फूट-फूट भरी दिखती है।

नकारी वृत्ति की समस्या : (Negativism):
पलायनवाद अथवा वास्तविकता अस्वीकरण :

कौलमेन के अनुसार-"इस मनोरचना में व्यक्ति अवांछनीय वास्तविकताओं की उपेक्षा करके उन्हें पहचानने से अस्वीकार करके टाल देता है।"[७७]

पेज के विचार में "जीवन की अनेक अप्रिय वास्तविकताओं को टालने के लिए हम या तो उन्हें अस्वीकार कर देते हैं या फिर उनके संपर्क में आने से इनकार कर देते हैं।"[७८]

इस मनोवैज्ञानिक समस्यां का चित्रण 'आपका बंटी', 'एक इंच मुस्कान' उपन्यास तथा 'कील और कसक', 'एक कमजोर लड़की की कहानी', 'घुटन', 'छतबनाने वाले' आदि कहानियों में विद्यमान है।

'आपका बंटी' उपन्यास में बंटी नकारी वृत्ति का शिकार हो जाता है। बंटी को अधिकतर अमि की गल्तियों की सजा मिलती है तो धीरे-धीरे उसकी आदत पड़ जाती है , कि उसकी माँ की किसी भी राय को स्वीकारता नहीं।

'एक इंच मुस्कान' की आत्मकेन्द्रित अमला विवाह की जरूरत महसूस करने पर भी विवाह स्वीकृत नहीं करती। "कोई भी पुरुष मेरे जीवन का पूरक हो, यह मेरे अहं को सहन नहीं, और समझ लो, यह अहं अमला का पर्याय है।"[७९]

'कील और कसक' कहानी में उपर्युक्त समस्या का चित्रण बहुत ही अच्छी तरह किया है। इस कहानी की रानी शेखर की बहू के प्रति नकारी वृत्ति का दृष्टिकोण ही अपनाती है। कारण, शेखर रानी से पूछ कर शादी नहीं करता। इसलिए शेखर के यह कहने पर कि - "भाभी' क्या बात है तुम्हें बह पसन्द नहीं आई ? कहती थी, तुम उससे ठीक से बोलती नहीं। नहीं बोलती तो क्या फांसी पर चढ़ा दोगे ? आये चार दिन हुए नहीं और तिरिया चरितर शुरु कर दिया।' 'तुम नाहक ही बिगड़ रही हो, सच बोलो तुम्हें पसन्द नहीं आई।' 'मुझे क्या

करना पसन्द नापसन्द करके । रूपवती है तो सिर पर बिठाकर रखो मुझे क्यों सुना रहे हो बार-बार।''[८०]

'एक कमजोर लड़की की कहानी' की रूप ललित के साथ तथा 'घुटन' की मोना, अरुप के साथ भागना-चाहती है । पर नहीं भाग पाती।

'छत बनाने वाले' की हीरा के डॉक्टर हो जाने पर तथा ताऊजी की लड़की की शादी तथा बच्चे हो जाने पर ताऊजी का विचार है - ''पेट में से तो डाक्टर होकर नहीं निकली थी।''[८१]

ताऊजी का यह आक्रोश इस वजह है कि उनसे सलाह नहीं ली गई थी। इस प्रकार नकारी वृत्ति की समस्या का चित्रण अनेक जगहों पर चित्रित किया मिलता है।

नैतिक अहम् : (Super Ego):

मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में अहं की चर्चा निजत्व मनोविश्लेषण सन्पत इंगों अर्थ में तथा स्वाभिमान के रूप में होती है।

''सामाजिक, सांस्कृतिक तथा वंश परंपरागत मान्यताओं को एवं मूल्यों द्वारा परिष्कृत प्रशिक्षित अहं का कुछ स्वरूप ही नैतिक मन कहलाता है।''[८२]

पराहम् (सुपरइगो) इच्छाओं को नैतिक्ता और सामाजिकता की कसौटी पर परखता है। मन्नूजी कई कहानियों में उपर्युक्त मनोवैज्ञानिक समस्या का चित्रण मिलता है।

'गीत का चुम्बन' कहानी की नायिका कुन्ती अपने साथी निखिल से प्रेम सम्बन्ध रखने के बावजूद उसके चुम्बन को सह नहीं पाती और जोर से निखिल के नाक पर तमाचा जड़ देती है। कारण, अपने संस्कार की इतना जल्दी नहीं भूल सकती। इसीलिए तो वह डांटती है -

''यह क्या किया तुमने ? बदतमीज़ कहीं के।... तुम्हारे लिये यह जरासी बात होगी, मेरे लिए नहीं। तुमने मुझे क्या ऐसी-वैसी लड़की ही समझ रखा है ? जानते नहीं, मुझे यह सब जरा भी पसन्द नहीं, जरा भी नहीं।''[८३]

यानि कि निखिल को वह स्नेह करते हुए भी नैतिक अहं उसे ऐसा करने से रोकता है। 'नशा' कहानी में उक्त अवस्था का चित्रण शंकर की पत्नी के माध्यम से हुआ है। शंकर अपनी पत्नी को शराब पीकर मारता है। गाली-गलोच भी करता है। यहाँ तक कि वह अपने बेटे किशनू को भी घर से भगाने के लिए मजबूर करता है। लेकिन आनन्दी किशनू के साथ चली जाने के बाद भी वह सिलाई करके कुछ रुपये अपने शराबी पति को भेजती रहती है, नैतिक अहं के कारण ही वह अपने शराबी पति की देखभाल यह सिलसिला पति ने घर से निकालने के बावजूद शुरु रहता है। क्योंकि वह अपने लड़के के घर सिलाई का काम-करके चोरी-छुपे से पैसे भेजती है। आनंदी का नैतिक अहं अपने पति के प्रति है।

'एक कमजोर लड़की कहानी' में भी उक्त अवस्था का चित्रण मिलता है, इस कहानी की रूप ललित को प्रेम करती है। लेकिन संस्कार युक्त होने के कारण ही उसके साथ शादी नहीं कर पाती, यहाँ तक कि उसके साथ भागने की कोशिश करती है, लेकिन वह कामयाब नहीं होती। क्योंकि उसके पति वकील साहब कहते हैं कि तुम कितनी अच्छी हो और आज एक ऐसा केस आया कि-

''मैंने तो साफ कह दिया, पढ़ी-लिखी है तो सिर पर बिठाओ पढ़ी-लिखी है पढ़ी लिखी है, अरे पढ़ी-लिखी तो तुम भी हो, भागने की बात तो दूर रही, दो साल हो गए, मुझे कभी याद नहीं पड़ता कि तुमने आँख उठाकर किसी पुरुष से कभी बात की हो। यह भी कोई बात हुई भला।''[८४]

और रूप की स्थिति नैतिक अहं के कारण परिवर्तित हो उठती है -

''रात का एक बजा था। रूप की आँखों से एक-एक करके आँसू टपकते जा रहे थे और उसके सूटकेस से एक-एक करके कपड़े बाहर निकलते जा रहे थे।''[८५]

वह प्रेमी के साथ भागना चाहती थी लेकिन - उसके संस्कार उसे ऐसा करने से रोकते हैं। उसके पीछे नैतिक अहं ही काम करता है।

'क्षय' की कुन्ती अपने भाई टुन्नी के फैल हो जाने पर पापा के माध्यम से

अगली कक्षा में पढ़ाने की सिफारिश पर वह कह उठती है -

''पापा कम से कम स्कूलों को तो इन सारी बातों से भ्रष्ट न करवाओ। टुन्नी मेरा अपना विद्यार्थी होता तब भी मैं उसे कभी नहीं चढ़ाती।''[८६]

कुन्ती के इन आदर्शों में पापा का ही हाथ था।

'अकेली' कहानी की सोमाबुआ के देवर के ससुराल वालों की किसी लड़की के साथ शादी तय होने पर सोमाबुआ का इंतजार करते रहना, लेकिन बुआ का न आने पर उसके घर न जाना नैतिक विवेक का सुंदर उदाहरण है।

'रानी माँ का चबूतरा' कहानी की गुलाबो 'सुपर इगो' के कारण गरीब होते हुए भी अपने बच्चे के लिए किसी से मदद न माँगकर शिशु सुरक्षा केन्द्र में दाखिल करा देती है। कहानी के अंत में इसका संकेत करते हुए मन्नूजी ने लिखा है -

''काका ने दीये के धीमे प्रकाश में पुड़िया को खोला तो देखा, काँच की छोटी-छोटी हरी चूड़ियाँ और 'शिशु-सुरक्षा केन्द्र' की पाँच रुपये की रसीद थी।''[८७]

इस प्रकार वह अपने नैतिक अहं बनाये रखती है। 'बाहों का घेरा' कहानी की कम्मों अपनी भतीजी इंदु के मंगेतर शम्मी से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करन चाहती है लेकिन कम्मों का नैतिक विवेक इस कार्य की स्वीकृति नहीं देता। शम्मी और इन्दु जब शादी के पहले निकट आते है तो वह आलोचना करती है -

''इतनी ही बेसब्री है तो कर ले शादी। शादी के पहले तो मर्यादा निभानी ही पड़ेगी।''[८८]

हालांकि ऐसा कहने के पीछे परा अहम् ही काम करता है। खुद भी अपने भतीजे के होने वाले पति के साथ शारीरिक सम्बन्ध जोड़ना चाहती है। लेकिन नैतिक अहं बीच में आता है।

'एक बार और' कहानी का कुन्ज बिन्नी से प्रेम करता है। लेकिन शादी

मधु से होती है। मधु से विवाह करने के बाद अपनी प्रेमिका बिन्नी से प्रेम सम्बन्ध रखना चाहता है। लेकिन उसका नैतिक विवेक उसको ऐसा करने से रोकते हैं। वह प्रेम सेकी अधिक महत्व विवाह को देता है।

मन्नू जी ने नैतिक अहं का चित्रण 'महाभोज', स्वामी, 'एक इंच मुस्कान' उपन्यासों में भी किया है। 'महाभोज' का नायक विस्सू मजदूरों को अपने अधिकारों के प्रति जागृत करता है। यह उसके नैतिक विवेक का ही परिणाम है।

''केवल अवेयर करता था अपने अधिकारों के लिए। जैसे सरकारने जो मजदूरी तय कर दी है वह जरूर लो.... नहीं दे तो काम मत करो। वह झगड़ा फसाद या मारपीट के लिए कभी नहीं कहता था।''[८९]

'स्वामी' उपन्यास की मिनी अपने प्रेमी के साथ चली जाती है लेकिन उसका नैतिक विवेक उसे फिरसे अपने पति घनश्याम के पास जाने को मजबूर करता है इसी कारण उसके मुँह से सहसा निकल जाता है -

''नरेन, मैं लौटकर जाऊँगी।''[९०]

'एक इंच मुस्कान' की अमला एक जगह पर कामोत्तेजित हो जाती है। और उसके बाद सहसा अपने आपको संयमित कर लेना नैतिक विवेक का ही परिणाम था।

समायोजन की समस्याएँ : प्रतिबल :

(अहं की सुरक्षात्मक गत्यात्मकता) कुंठा, हताशा या निराशा एवं द्वन्द्व :

एन.एल. मन का विचार है -

''कुंठा जीव की वह अवस्था है जो किसी प्रेरणात्मक व्यवहार की सन्तुष्टि के कठिन अथवा असंभव हो जाने के कारण उत्पन्न होती है।''[९१]

कुंठा शब्द के सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिकों में एक मत नहीं है। इसके मुख्यत: तीन अर्थ माने जाते हैं। जो कुंठा के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में सम्बन्धित है। जब व्यक्ति की आवश्यकता और उसकी पूर्ति के साधन अर्थात् लक्ष्य के बीच जब

कोई अड़चन अथवा अवरोध उत्पन्न हो जाय या जब कोई उपर्युक्त लक्ष्य सामने ही न हो तो व्यक्ति में कुंठा उत्पन्न होती है। कुंठा के दो स्रोत हैं उसी से कुंठा उत्पन्न होती है।

(१) ब्राह्म कुंठा (Extrenal Frustration)

(२) आन्तरिक कुंठा (Internal Frustration)

(१) ब्राह्म कुंठा (Extrenal Frustration) :

''पर्यावरण में ऐसे अनेक भौतिक और सामाजिक अवरोध होते हैं जो हमारी आवश्यकता पूर्ति के प्रयासों को विफल कर देते हैं। सूखा, बाढ़, अग्नि कांड, भूकम्प, दुर्घटना, प्रियव्यक्ति की मृत्यु आदि भौतिक अथवा प्राकृतिक अवरोध हैं। सामाजिक अवरोधों के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के सामाजिक प्रतिबंध और नियंत्रण आते हैं, जिन्हें तोड़ने पर दंडित किया जाता है। विवाहेत्तर और विवाह-पूर्व कामुक सम्बन्ध, चोरी, शारीरिक हिंसा आदि जैसे अनेक व्यवहारों को तो समाज विरोधी माना ही जाता है। किन्तु कुछ ऐसे सामाजिक नियम भी है जिनका पालन करने पर कुंठा का सामना करना पड़ता है।''[१२]

आंतरिक कुंठा : "(Internal Frustration) "

''शारीरिक अक्षमताएं ; जैसे - शारीर का विकलांग, दुर्वल अथवा अस्वस्थ होना, अपर्याप्त योग्यता जैसे - बुद्धि का मन्द होना, सामाजिक आकर्षण की कमी जैसे - साँवला रंग अथवा असुन्दर होना आदि अनेक ऐसी व्यक्ति गत कमियाँ हैं जो व्यक्ति के जीवन में निरन्तर कुंठा उत्पन्न करती रहती है। थकान और रोग आन्तरिक कुंठा के स्रोत हैं।''[१३]

मन्नूजी ने निराशा का वर्णन कई कहानियों व उपन्यास में किया है। प्रेम की असफलता भी व्यक्ति के जीवन में हताशा पैदा करती है। इस कारण व्यक्ति के निर्णय शक्ति पर बहुत बुरा असर पड़ता है। 'एक कमजोर लड़की की कहानी' की रूप का प्रेमी कुछ समय के लिए बाहर चले जाने के कारण उसकी शादी

अपने प्रेमी के साथ नहीं होती। रूप की शादी पिता के कहने पर वकील साहब के साथ हो जाती है। जब उसका प्रेमी वापस आता है, तो उसके साथ मिलने के लिए बहुत दु:खी रहती है। वह वकील साहब के घर कुंठा के साथ जीवन यापन करती है। उसकी कुंठा बाह्य कुंठा कह सकते हैं।

'स्त्री सुबोधनी' की मैं शिंदे जैसे विवाहित युवक से प्रेम करना उसके प्रति लगाव पैदा करने के पीछे विवाह के प्रति निराशा या कुंठा का ही भाव है।

'अनथाही गहराईयाँ' का शिवनाथ प्रेम में असफल होने के कारण कुंठा की भावना से ओतप्रोत हो आत्महत्या कर लेता है। उसके पीछे बाह्य कुंठा जवाबदार है।

'बाहों का घेरा' कहानी की कम्मो काम अतृप्ति के कारण निराशा का शिकार होती है। इसी कारण वह अपनी ही भतीजे के मंगेतर के साथ शारीरिक सम्बध जोड़ने का सोचती है। ऐसा सोचने के पीछे कुंठा ही जवाबदार है।

'ईसा के घर इन्सान' का फादर एंजिला नामक नर्स को अपने वश में न कर सका, इस कारण वह हताशा का शिकार होता है। फलस्वरूप बीमार हो जाता है।

'क्षय' कहानी की कुन्ती अपने पापा की बीमारी से वह शारीरिक एवं मानसिक रूप से हताश हो उठती है वह इतनी कुंठित हो जाती है कि भगवान का आह्वान करती है-

''हे भगवान ! अबतो तू पापा को उठा ले। मुझसे यह बरदाश्त नहीं होता ! मैं टूट चुकी हूँ।''[१४]

'महाभोज' उपन्यास में भी उक्त अवस्था चित्रण मिलता है। 'महाभोज' का आई.जी. सक्सेना एक प्रतिष्ठित ओफिसर है। वह खूनी को पकड़ने के सही प्रमाण एकत्रित कर लेता है। लेकिन, राजनीतिज्ञों के द्वारा उसे गैर जिम्मेदार एवं भ्रष्ट ऑफिसर ठहरा दिया जाने की वजह से उसमें कुंठा का भाव पनपने लगता है।

'आपका बंटी' उपन्यास में भी कुंठा का चित्रण मिलता है। बंटी अपनी

ममी व पापा को एक साथ करने की पूरी कोशिश करता है। लेकिन, वह असफल रहता है। इस लिए वह कुंठा का शिकार होता है। फलस्वरूप उसका स्वभाव चिड़-चिड़ा होता जाता है। शकुन चाहती है कि बंटी अपने नये पापा का स्वीकार कर लें। लेकिन उस में वह असफल रहती है। इसी वजह से वह हताशा हो बंटी को अजय के पास भेज देती है।

'एक इंच मुस्कान' में प्रेम की असफलता के कारण अमला विक्षिप्त होकर आत्महत्या करती है ; क्योंकि मानसिक कुंठाओं से पीड़ित व्यक्ति के लिए दूसरा कोई रास्ता नहीं बचता।

अंतर्द्वन्द्व : (Conflicts):

बोरिंग लैंगफील्ड तथा वेल्ड के अनुसार -

"अन्तर्द्वन्द्व वह अवस्था है जिसमें दो या विरोधी प्रेरणाएँ उत्पन्न होती हैं तथा जिनकी एक साथ तृप्ति संभव नहीं होती है।"[९५]

लेविन के अनुसार-

"अन्तर्द्वन्द्व व्यक्ति की वह अवस्था है जिसमें विरोधी और समान शक्तिवाली प्रेरणाएं एक ही समय में कार्यरत होती है।"[९६]

अन्तर्द्वन्द्व चेतन तथा अचेतन दोनों स्तरों पर हो सकते हैं, परंतु अधिकांश अन्तर्द्वन्द्व चेतन स्तर पर ही होते हैं। अचेतन स्तर के अन्तर्द्वन्द्व अधिकांश मानसिक रोगियों में ही अधिक पाये जाते हैं। अन्तर्द्वन्द्व में दो इच्छाएं महत्वाकांक्षाएं, कतिपय आदर्श और विश्वास आदि कुछ भी हो सकते हैं।

मन्नूजी ने 'एक कमजोर लड़की की कहानी', 'ऊँचाई', 'यही सच है', 'बन्द दराजों का साथ', 'मैं हार गई', 'चश्मे' आदि कहानियों में उक्त समस्या का चित्रण किया है।

'यही सच है' कहानी की नायिका दीपा उपर्युक्त समस्या से ग्रस्त है। वह निशीथ एवं संजय दोनों से प्रेम करने के कारण इस अन्तर्द्वन्द्व में फँस जाती है। क्या सच है क्या झूठ, इसके सही निर्णय पर नहीं पहुँच पाती। वह निशीथ की

उपस्थिति में संजय को याद करती हुई कहती है-

"वह क्या बिना बाहों में भरे, बिना प्यार किये यों ही चला जाता।"[पृ.९७]

वह संजय से प्रेम सम्बन्ध रखते हुए भी निशीथ से प्रेम सम्बन्ध रखना चाहती है। इतना ही नहीं दीपा निशीथ के शारीरिक स्पर्श के बाद संजय के प्रेम को ज्यादा महत्व नहीं देती। इस लिए वह कहती है -

"मैं सब समझ गई निशीथ, सब समझ गई। जो कुछ तुम इन चार दिनों में नहीं कह पाये। वह तुम्हारे इन क्षणिक स्पर्श ने कह दिया। .... मुझे लगता है यंह स्पर्श, यह सुख यही सत्य है, बाकी सब झूठ है अपने को भूलने का, भरमाने का, छलने का प्रयास है।"[९८]

यही दीपा जब फिर से संजय से मिलती है और वह उसे स्पर्श करता है तो फिरसे उसके मन में यह अन्तर्द्वन्द्व पैदा होता है कि निशीथ का प्रेम अच्छा नहीं है। लेकिन संजय की बाहों में बंधकर यह महसूस करती है -

"यह स्पर्श, यह सुख, यह क्षण ही सत्य है यह सब झूठ था, मिथ्या था, भ्रम था...।"[९९] इस प्रकार 'यही सच है' की दीपा दोनों के प्रेम में फँसी हुई नजर आती है। पूरी कहानी में वह उस अन्तर्द्वन्द्व में फँसी रहती है कि किस का प्रेम सही है ? अंत तक कोई निर्णय नहीं ले सकी।

'बाहों का घेरा' कहानी की कम्मों काम अतृप्ति के कारण मानसिक यातना भुगतती है। मित्तल उसका पति है लेकिन वह अपने काम-धंधे में व्यस्त रहता है इस वजह से कम्मों की काम-इच्छा तृप्त पूर्ण नहीं हो पाती। कम्मो मानसिक द्वन्द्व झेलती हुई अपनी ही भतीजी के मंगेतर के साथ शारीरिक सम्बंध जोड़ने की आकांक्षा रखती है। पर नैतिक विवेक की वजह से ऐसा नहीं कर पाती। उसके मानसिक द्वन्द्व का चित्रण करते हुए मन्नूजी लिखती है-

"रात में मित्तल जब सो जाता वह पास पड़ी-पड़ी उसे देखा करती और फिर रो पड़ती। एक ही ललक उसके मन को बेधती रहती कि ऐसा हो जाए कि मित्तल की यह सारी जड़ता, सारी यान्त्रिकता एक झटके से दूर हो जाए और वह पागलों की तरह उसे अपनी भुजाओं में कसले, अपने सीने में समेट ले और फिर

उन्मत्त-सी वह उसके सिर को अपनी छाती में छिपा ले, उसके गले में बांहें डाल दे - दोनों एक दूसरों को पूर्ण कर दें। पर एसा कभी नहीं हुआ और कम्मो के दिल-दिमाग पर मित्तल का चेहरा उसकी बांहे, उसका सीना छाया रहता और मन में शूल-सा कुछ चुभता रहता।''[१००]

मित्तल से काम-अतृप्ति के कारण अपने पूर्वप्रेमी शैलेन, भतीजी के मंगेतर, आदि के साथ काम-आतृप्ति को पूर्ण करने की ललक में वह मानसिक अन्तर्द्वन्द्व में फँसी रहती है।

'एक कमजोर लड़की की कहानी' की रूप अपने प्रेमी को भी नहीं छोड़ सकती और पति को भी। वह बहुत बड़ी यातना भुगतती है। संस्कार वश वह प्रेम के विदेश जाने के बाद पिता के कहने पर वकील साहब से शादी कर लेती है। लेकिन प्रेमी के लौटने पर पुन: उसे प्राप्त करने के लिए घर से भागने के लिए भी तैयार हो जाती है। 'लेकिन क्या करूँ'? इस अन्तर्द्वन्द्व में वह कोई निर्णय नहीं ले पाती।

'संख्या के पार' के बाबा अपनी लड़की से सम्बन्ध काट देते हैं, क्योंकि वह विधवा होते हुए भी किसी व्याकित के साथ भाग जाती है। आठ वर्ष हो जाते हैं फिर भी बाबा उसको घर में आने नहीं दिया। वे झूठे अहंम के कारण वह कहते हैं - ''वह नहीं आ सकती ... इस घर में पाँव भी नहीं रख सकती। सच कहता हूँ वह आयी तो मैं उसकी टांगे तोड़ दूँगा।''[१०१]

ऐसा कहने वाले पिता जब उसकी लड़की काफी दु:खी हो सहायता माँगने के लिए घर आती है तो पापा उसे १०,०००/- का चेक दे देते हैं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है वह लड़की को मिलने तो लालालित है लेकिन झूठा अहं उसे ऐसा करने से रोकता है।

'तीसरा आदमी' में सतीश के मन में जो अन्तर्द्वन्द्व है वह उसकी आत्महीनता और विश्वास हीनता का परिणाम है। सतीश में पौरुषहीनता की भावना कूट-कूट कर भरी हुई दिखाई देती है उससे वह यह मानसिक द्वन्द्व में जीता है कि मेरी पौरुषहीनता के कारण मेरी पत्नी शकुन दूसरे लोगों से अनैतिक

सम्बन्ध रखती होगी। शकुन के घर लेखक मित्र आने के बाद यह अन्तर्द्वन्द्व चरम सीमा पर पहुँचता है वह सोचता है -

''जिस शकुन को पिछले पाँच साल से वह अपने शरीर के अभिन्न अंग की तरह प्यार करता आ रहा है, वह इस समय किसी और की बांहों में पड़ी मस्ती मार रही होगी... और वह है जो बेघरबार होकर यों दर-दर भटक रहा है ।.... उसे लगा, वह सचमुच ही पौरुषहीन है । कोई मर्द बच्चा होता, तो दो लात मारता दरवाजे को, और झोंटा पकड़कर बाहर कर देता शकुन को और दो झापड़ मारता उस लफंगे को । उसके सारे अस्तित्व को बुरी तरह मथता हुआ आज यह विश्वास पूरी तरह उसके मन में जम गया कि वह पुरुष नहीं है... और उसे लगा यह बाततो बहुत पहले से ही जान गया था, तभी तो कभी उसकी हिम्मत नहीं हुई कि जाकर डॉक्टर को दिखा आए। आज के व्यवहार ने तो उसे पूरी तरह सिद्ध कर दिया। लानत है उस पर ! थू ! उसने सामने पानी में थूक दिया। कोई असली मर्द-बच्चा होता तो... उसे अपने-आपसे नफरत होने लगे । ठीक ही तो किया शकुन ने । कौन औरत ऐसे नामर्द की पत्नी होकर रहना पसन्द करेगी।''[१०२] सतीश द्वारा इस प्रकार का सोचना अन्तर्द्वन्द्व की चरमसीमा कह सकते हैं।

मन्नूजी के 'आपका बंटी', 'महाभोज', 'स्वामी' आदि उपन्यासों में भी अन्तर्द्वन्द्व चित्रण किया है । लोचन भैया बिसू की मौत के कारण अपने मनके अन्तर्द्वन्द्व प्रकट करते हुए कहता है -

''लेकिन हजार-हजार प्रश्नों के सलीब पर टंगा हुआ उनका मन हर पल उन्हें मथता रहता है अपने आस-पास और चारों ओर जो कुछ हो रहा है, उसे आँख मूँदकर स्वीकारते रहे - एकदम उदासीन और तटस्थ होकर रह सकता है कोई भी जीवित आदमी इस तरह ? नहीं रह सके थे, तभी तो एक बहुत बड़ी क्रांति के एक छोटे से वाहक बने थे । पर कैसी हुई यह क्रांति कहीं से कुछ भी तो नहीं बदला। अब कहाँ से होगी दूसरी क्रांति और कौन करेगा उस क्रांतिको जो सब कछ बदल दे ? आज तो परिवर्तन का नाम लेने वाली आवाज घोंट दी जाती है - उसे काटकर फेंक दिया जाता है। एक तरफ फिके गिने-चुने आदमियों

की घुटे गले और रूँधी आवाजों से क्रांति का स्वर फूट सकेगा अब कभी।''[१०३]

'स्वामी' उपन्यास में मिनी का अन्तर्द्वन्द्व एक पढ़ी लिखी संघर्षषिनी नारी का है। जो शोषण और अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए तत्पर है। क्योंकि वह हाथ घर कर बैठने वाली नारी नहीं है। पुराने बुरे संस्कारों के प्रति उसके हृदय में बहुत-बड़ा आक्रोश है। उन्हें बदल न पाने के कारण वह बहुत दु:खी है। उसका अन्तर्द्वन्द्व है -

''हम लोग पढ़-लिख, सोच-विचार कर बौधिक रूप से तो बहुत आगे बढ़ जाते हैं... बहुत बड़ी-बड़ी बातें सोच डालते हैं और केवल सोचते ही नहीं, उन्हें करने के लिए कदम बढ़ाते हैं पर उतना सब कर नहीं पाते। सदियों पुराने संस्कार हमें पीछे खींचते हैं।''[१०४]

'आपका बंटी' उपन्यास में जो अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण हुआ है वह अद्वितीय है। शकुन और बंटी के आंतरिक द्वन्द्व को मन्नूजी ने मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सुक्ष्मतापूर्वक व्यंजित किया है। जब शकुन और डॉ. जोशी एक-दूसरे के निकट आते हैं तो बंटी बहुत-दुखी नजर आता है। शकुन और डॉ. जोशी के सम्बन्ध को लेकर बंटी के मन में जो कटुता है, उसके कारण शकुन के अन्तर्मन में यह द्वन्द्व उठता है -

''बंटी उसके और अजय के बीच सेतु नहीं बन सका तो वह उसे अपने और डॉक्टर के बीच में बाधा भी नहीं बनने देगी।''[१०५]

ऐसा सोचने के बाद जब बंटी का चेहरा देखती है तो वह पश्चाताप की अग्नि में तड़पती है। वह सोचती है -

''कहाँ, यह तो बिल्कुल बंटी है। इस में अजय कहाँ है? हर बात के लिए उस पर करने वाला बंटी उसी का पाला पोसा और बड़ा किया हुआ बंटी।.... रात में हल्के से आक्रोश की जो परतें मन पर जमी थीं, बंटी की उस निरीहता के सामने सब एक-एक कर धुल गई।''[१०६]

जब बंटी के उत्पात बढ़ जाते हैं वह उस अन्तर्द्वन्द्व से गुजरती है -

''बंटी को दरार बनाना है तो मीरा और अजय के बीच बने। अजय भी

तो जाने कि बच्चे को लेकर किस तरह यातना से गुजरना होता है ... कि पुरानी स्लेट इतनी जल्दी आसानी से साफ नहीं होती ।''[१०७]

हालांकि दूसरी यह बात उस के अन्तर्मन में उभर आती है कि जिस बंटी ने मेरे लिए सर्वथा अजय को भुला देने की चेष्टा की है, मम्मी की ही बात मानने वाला बंटी अजय ने जो खिलौने दिये उसे अलमारी में रख दिये । साथ-साथ तस्वीरों को भी अलमारी में रख दिये । उसी बंटी ने मुझे कहा था -

''ममी मैंने पापा से कह दिया कि ममी के बिना मैं कही जा ही नहीं सकता ... मम्मी मैं तुम्हें कभी-कभी नहीं छोडूंगा ... मत रोओ, ममी-मत रोओ ।''[१०८]

इस कथन को स्मृति पटल पर लाती है तो वह फूट-फूट कर रो उठती है और सोचती है कि इस यंत्रणा से तो मुझे डॉ. जोशी भी नहीं बचा सकते । मन्नू जी ने बंटी के अन्तर्द्वन्द्व का सूक्ष्म-मार्मिक वर्णन किया है । जब शकुन कहती है कि तुम मुझे इस नये घर में बहुत तंग कर रहे हो, तो बंटी का अन्तर्मन बोल उठता है -

''हाँ मिलता है सुख.... जरूर करूँगा शर्मिन्दा । तुम नहीं कर रही हो मुझे शर्मिन्दा ? यहाँ दूसरो के घर लाकर पटक दिया । अपना घर होगा, कोई नहीं अपना घर ? मैं नहीं रहता किसी के घर में ।''[१०९]

बंटी जब कलकत्ता जानो की तैयारी कर रहा था , तब शकुन एवं बंटी दोनों के अन्तर्मन में क्रमश: यह द्वन्द्व चलता रहता है कि बंटी मुझे छोड़कर कलकत्ता नहीं जा सकता तथा बंटी सोचता है ममी मुझे कलकत्ता नहीं जाने देगी । शकुन का अन्तर्द्वन्द्व देखिए -

''कार लौट आई है । उसमें से डॉक्टर अमि और जोत उतरे तो उसे एक बार फिर नये सिरे से धक्का सा लगा । तो बंटी चला गया । ... मैं नहीं जाऊँगा, मैं ममी के पास जाऊंगा ममी के पास रहूँगा । अजय का कातर हो आया चेहरा, डॉक्टर का असमंजस, जोत से चिपककर खड़ा डरा-सहमा बंटी । ममी ऽऽ गाड़ी से उतर कर वह उससे लिपट गया है - दोनों की आँखों में आँसू-गलती हुई वर्फ

की दीवार।''[११०]

इस प्रकार बंटी के बारे में शकुन का सोचना, अन्तर्द्वन्द्व की चरमसीमाएँ लाँघ जाता है। शकुन और बंटी के अन्तर्द्वन्द्व से तो भावुक पाठक रोये बिना नहीं रह सकता। कितनी वेदना भरी है दोनों के अन्तर्द्वन्द्व में। इस उपन्यास के बंटी का अन्तर्द्वन्द्व तो मुझे गहरा दु:ख अनुभव कराता है कि मानवी छोटे-छोटे बच्चों के साथ इस प्रकार पेश आते हैं ? ऐसे बच्चों के दु:खों का अंत कैसे दूर हो सकता है ! शायद हमें भी उस पर गंभीरता से सोचना है, इसलिए मन्नूजी ने इस उपन्यास का सर्जन किया है।

अन्तर्द्वन्द्व की दृष्टि से 'आपका बंटी' उपन्यास खरा उतरता है। यह अन्तर्द्वन्द्व सूक्ष्म से सूक्ष्मतर तक ले जाता है। पूरा उपन्यास बंटी और शकुन के अन्तर्द्वन्द्व को लेकर लिखा गया है। डॉ. नीरजा ने बंटी के मानसिक द्वन्द्व को केन्द्र में रखकर 'आपका बंटी' उपन्यास के बारे में ठीक ही लिखा है -

''बंटी की करुणिक गाथा को वाणी प्रदान करना ही लेखिका का लक्ष्य है। यह नियति की विडम्बना है कि ममी पापा दोनों के पास निजी विकल्प है लेकिन बंटी दोनों समान स्थितियों में किसे चुने, यही उसका मानसिक द्वन्द्व है और इसे झेलता हुआ वह दोनों ही घरों से कटकर रह जाता है।''[१११]

'एक इंच मुस्कान' की अमला अमर को कभी पाना चाहती है तो कभी नहीं।

''पुरुषों से मानसिक स्तर पर आत्मीय स्थापित करना उसे प्रिय है पर अपनी स्वतंत्रता पर अंकुश लगाकर विवाह सूत्र में न बन्धना मानो उसके आत्मसंतोष की परिणति है। इस प्रकार उसका व्यक्तित्व पुरुषहंत बन गया है।''[११२]

पीड़ा की समस्या :

पीड़ा शारीरिक और मानसिक होती है। पीड़ा के बारे में रामचन्द्र वर्मा ने लिखा है -

''प्राणियों को दु:खित या व्यथित करने वाली वह अप्रिय अनुभूति जो

किसी प्रकार का मानसिक या शारीरिक आघात लगने, कष्ट पहुँचने या हानि होने पर उत्पन्न होता है और उसे बहुत ही भिन्न और विकल रखती है, पीड़ा है।''[११३]

मन्नू जी के कथा साहित्य में वेदना को मनोवैज्ञानिक स्तर से उभारा है। यह पीड़ा कभी अकेलेपन, तो कभी प्रेम असफलता, काम अतृप्ति आदि के कारण पनपती दिखती है। आपका बंटी उपन्यास में शकुन के माध्यम से पीड़ा की समस्या का चित्रण लेखिका ने किया है। शकुन और अजय पति-पत्नी होते हुए भी अलग रहते है। क्योंकि दोनों में अहं की भावना विद्यमान थी। अजय शकुन से अलग रहता है, तो शकुन यह पीड़ा अनुभव करती है-

''एक अध्याय था, जिसे समाप्त होना था, और वह हो गया। दस वर्ष का यह विवाहित जीवन एक अंधेरी सुरंग में चलते-चले जाने की अनुभूति से भिन्न न था। आज जैसे वह एका-एक उसके अन्तिम छोर पार आ गई है। पर आ पहुँचने का संतोष भी तो नहीं है, न प्रकाश, न वह खुलापन ? न मुक्ति का एहसास। लगता है जैसे इस सुरंग ने उसे एक दूसरी सुरंग के मुहाने पर छोड़ दिया है- फिर एक और यात्रा वैसा ही अंधकार, वैसा ही अकेलापन।''[११४]

अजय और बंटी के बारे में जब-जब सोचती है तो उसकी दयनीय स्थिति दर्ददायक हो उठती है। उसी दयनीय मनोदशा का चित्रण करते हुए स्वयं मन्नूजी ने लिखा है -

''शकुन को लगा जैसे कोई पूरे होश-हवास में उसे आरी से चीरा जा रहा है। एक बहुत ही कटु और बीभत्स सच्चाई है, जिसे उसे पूरे नंगेपन में चाचा उसके सामने रखना चाहते पर क्यों-क्या वह यह सब नहीं जानती ? या कि उसने इस सब पर सोचा नहीं है। दिनों, हफ्तों, महीनों सोचा है। रात-रात भर जागकर सोचा है, पर सोचना उसे कहीं उबारता नहीं, केवल डुबोता है, गहरे में, और गहरे में।''[११५]

बंटी को अपने पिता की तरह ही जिद्दी बनता देखकर तो उसकी मानसिक यातना और दयनीय हो उठी -

''और एक अजीब-सी बेचैनी शकुन के मनमें घुलने लगी। केवल बेचैनी

ही नहीं, एक खीझ, एक हल्का सा आक्रोश। सारी जिन्दगी अजय शकुन को, शकुन के हर काम को, उसके सीचने और उसके हर रवैये को गलत ही तो सिद्ध करता रहा है। शकुन बहुत स्वतंत्र है शकुन बहुत डॉमिनेटिंग है, शकुन यह है, शकुन वह है।.... जो भी हो पर सात साल तक गलत होने के अपराध बोध को उसने किसी न, किसी स्तर पर हर दिन ही झेला है।''[११६]

इस प्रकार शकुन अजय के साथ रहकर भी अकेलेपन की पीड़ा तथा विवाह-विच्छेद के बाद भी अकेलेपन की पीड़ा भुगतती है।

बंटी के अकेलेपन की पीड़ा को मन्नू जी ने स्वयं अनुभव किया है -

''बंटी, मुझे तूफानी समुद्री यात्रा में किसी दीप पर छूटे हुए अकेले और असहाय बच्चे की तरह नहीं वरन् अपनी यातना के कारणों के साथ भोगते हुए दिखाई दिया।''[११७]

बंटी, और शकुन के पीड़ा को मन्नू जी इतने सूक्ष्म रूप से चित्रित किया, मानो स्वयं लेखिका ने ऐसा जीवन जीया हो। 'एक इंच मुस्कान' में भी अमला और रंजना के अकेलेपन के चित्रण के माध्यम से उपर्युक्त समस्या का चित्रण मन्नू जी ने किया है। इस उपन्यास की अमला पति के द्वारा परित्यक्त नारी है। इस कारण उसके भीतर सभी प्रकार से बंधनों को तोड़ने की प्रबल आकांक्षा जन्म लेने लगती हैं। वह सोचती है -

''वह सड़ना नहीं चाहती, सूखना नहीं चाहती, बहना चाहती है, निरन्तर बहना चाहती है। अनजानी, अनदेखी दिशाओं में बहना चाहती है, दूर-दूर निरुद्देश्य-सी पर निर्बन्ध और उन्मुक्त।''[११८]

अमला भीतर से दु:खी है। वह अपनी अतृप्त वासना को पूर्ण करने के लिए पीड़ित हो, सोचती है -

''पर आजकल मैं अपने जीवन में पुरुष का अभाव महसूस करती हूँ ... एक ऐसे पुरुष का जो बहशियों की तरह मुझे प्यार करे, सब चीजों से अलग करके मुझे प्यार करे, केवल मुझे ; मेरे इस शरीर को, मन को, आत्मा को।..... मन करता है कोई बाहों में कस ले, इतना कस ले, कि मेरी सारी नसें झनझना

कर टूट जाएं, बिखर-बिखर कर चूर-चूर हो जाएं। किसी सोते पुरुष के होंठों को इतना चूमूँ, इतना चूमूँ कि वह चौंक जाए और लाज से दु:खी होकर उसकी छाती में अपना सिर गढ़ा दूँ।''[११९]

प्रेम की असफलता के कारण अमला आत्महत्या कर लेती है। क्योंकि मानसिक अन्तर्द्वन्द्व से पीड़ित व्यक्ति के लिए दु:खों के छूटने का आत्महत्या श्रेष्ठ मार्ग है। रंजना के पीड़ा का वर्णन करते हुए लेखिका ने खुद रंजना के मुख से कहलवाया कि -

''तुम्हारे हर व्यवहार की प्रतिक्रिया ने तुम्हारी उपेक्षा, अवहेलना, तुम्हारे झूठा छल और विश्वासघात की प्रतिक्रिया पर प्रहार किया है, हर बार मेरा मन बुरी तरह घुटा है, तड़पा है, सिसका है।''[१२०]

रंजना पति से तृप्त नारी नहीं है, इसी कारण उसके मन की वेदना कष्टदायक होती है। उसका अतृप्त मन आगे भी पीड़ित हो सोचता है -

''निकटतम क्षणों में भी मैंने तुम्हारे शरीर का दबाव ही महसूस किया है, उस गर्मी का अहसास ही नहीं हुआ जो प्यार से उत्पन्न होती है और जिसके मन की जड़ता गल जाती है और अलगाव की सीमाएं डूब जाती हैं।''[१२१]

इस प्रकार रंजना अधिकार भाव से वंचित होने की वेदना भोगती है और अमला से अमर का सानिध्य उसकी इस पीड़ा को और बढ़ावा देता है।

'अकेली' कहानी में लेखिका ने सोमा बुआ की पीड़ा को अभिव्यक्ति दी है। कहानी के आरंभ में मन्नू भंडारी सोमा बुआ के बारे में लिखती है -

''सोमा बुआ बुढ़िया है।
सोमा बुआ परित्यक्ता है।
सोमा बुआ अकेली है।''[१२२]

कहानी का शीर्षक ही सोमा बुआ के पीड़ा का संकेत करता है। सोमा बुआ की वेदना हमारे मन के तह को झकझोरती है। पति के द्वारा पीड़ित तथा सम्बन्धियों द्वारा भी उसे शुभ प्रसंगों में न बुलाना ऐसी अकेली, परित्यक्ता बुढ़िया की वेदना का मार्मिक चित्रण 'अकेली' कहानी में हुआ है।

'बन्द दराजों का साथ' की मंजरी अपने पति विपिन से जुदा हो अकेलेपन की पीड़ा को सहती रहती है। उसकी वेदना उसके इस कथन से प्रकट होती है -

"रात में, दिन में, लेटे-लेटे मंजरी न जाने क्या-क्या सोचा करती ! जब-तब विपिन भी याद आने लगा और आश्चर्य यह कि उसका यों याद आना अब इतना बुरा भी नहीं लगता। फिर भी वह इस अहसास से मुक्त नहीं हो पाती कि विपिन ने केवल अपनी जिंदगी को ही टुकड़ों में नहीं काटा, कितने कौशल से वह उसकी जिन्दगी को भी टुकड़ों में काट गया है कि आगे उसे सारी जिन्दगी ही इन टुकड़ों की अभिशप्त छाया में काटनी होगी कि वह अब कभी भी अपनी सम्पूर्ण ज़िन्दगी नहीं जी पायेगी।"[१२३]

'ऊँचाई' कहानी का अतुल शिवानी को न पाकर अकेलेपन की पीड़ा को आह्वान करता है। जब शिवानी की शादी शिशिर से हो जाती है वह बहुत दुःखी हो उठता है वह एक जगह पर शिवानी को अपनी वेदना से परिचित कराता हुआ कहता है -

"मैं खुद नहीं जानता क्या बात है, पर शादी के लिए मन में कोई उत्साह नहीं पाता। ऐसा नहीं कि तुम्हारे बाद मेरे जीवन में कोई आया नहीं ... दो लड़कियाँ आई और बहुत निकट आई पर तुमसे कटकर मैं शायद कहीं से इतना ज्यादा टूट चुका था कि फिर किसी के साथ उस तरह से जुड़ नहीं पाया। शायद मैं कहीं से बेहद जड़ हो गया हूँ - आई एम कम्प्लीटली डैड शीनू, कम्प्लीटली डैड। किसी लड़की को देने के लिए मेरे पास कुछ भी तो नहीं है। मरे हुए प्यार की लाश को मैं ढो रहा हूँ, और उसे ढोते-ढोते मैं खुद लाश हो गया हूँ।"[१२४]

'स्वामी' उपन्यास में पति द्वारा काम अतृप्त मिनी की स्थिति दयाजनक है, क्योंकि घनश्याम से वह बहुत दुःखी है। घोर मानसिक यातना उसके आत्मसम्मान को झकझोर देती है -

"क्यों रहें, किसके लिए रहें ? क्या जन्म भर के लिए उसकी नियति इस चटाई और इस कोने के साथ ही बंध गई ? मन में उठने वाले इन आवेगों को वह क्या करे ? किस दीवार के साथ वह सर फोड़े ?"[१२५]

मिनी के प्रेम-विवाह की हताशा और पराजिता के बारे में निम्न लिखित कथन हमें भली भाँति परिचित कराता है। वह पति से इतनी पीड़ित है -

''फाँसी की वास्तविक यातना उतनी भयंकर नहीं होती जितनी उसकी प्रतिक्षा की यातना, उस क्षण तक पहुँचने की यातना।''[१२६]

मिनी का काम अतृप्त मन उसे पूर्वप्रेमी के पास जाने के लिये लालायित करता है। मन्नूजी के कथा-साहित्य में अनेक जगह पर उक्त मनोवैज्ञानिक समस्या का चित्रण मिलता है।

'सजा' कहानी में भी उक्त समस्या का चित्रण मिलता है। 'सजा' में पिता के सस्पेन्ड होने पर उसके परिवार को जो मानसिक यातना भुगतनी पड़ती है वह दयनीय है। इस वेदना से छोटे बच्चे भी नहीं छूट पाये। इन छोटे बच्चों की पीड़ा कितनी मार्मिक व मौलिक बन पड़ी है। जैसे -

''यों घरवालों के साथ रोई मैं रोज ही थी; पर उस दिन पहली बार मेरा मन रोया था, अपनी पूरी समझ के साथ रोया था। क्या हो गया मेरे पापा को ? पच्चीस दिनों बाद घर में घुसे और प्यारकरना तो दूर रहा, हमारी ओर देखा तक नहीं। बार-बार मन कहने लगा कि वह मेरे पापा नहीं हैं। वह ऐसे हो ही नहीं सकते। जेलवालों ने इन्हें बदल दिया है। एक अजीब-सा भय मन के सामने लगा कि अब शायद पापा कभी प्यार नहीं करेंगे। और सचमुच उसके बाद मैंने कभी उनका प्यार नहीं पाया - आज तक नहीं। इस कार्ड में क्या वह एक पंक्ति भी हमारे लिए नहीं लिख सकते थे ? यों मैं उनकी इस उदासीनता और तटस्थता को समझती भी हूँ। शायद वह अब किसी से मोह नहीं रखना चाहते। कहीं फिर सज़ा हो गई तो ?''[१२७]

इस प्रकार आशा की पीड़ा-जनक मनः स्थिति का सुन्दर मार्मिक चित्रण इस कहानी में हुआ है। 'क्षय' कहानी की कुन्ती की पीड़ा भी दयाजनक है वह अपने पिता के बारे में सोचती है -

''रात में सोयी तो सोच रही थी कि ये पाँच सौ रुपये कैसे चुकायेगी ? मामा को लिख दे कि गाँव का मकान बेंच दें ? .... मामा को एक बार कम से

कम आकर तो देखना चाहिए था। आज कितना असहाय वह अपने को महसूस कर रही थी।इतनी बड़ी दुनिया में क्या कोई भी ऐसा नहीं है। जो उसकी पीठ पर आश्वासन-भरा हाथ रखकर दो शब्द सान्त्वना के ही कह दे ? रोते-रोते उसकी हिचकियाँ बँध गई। अचानक ही इसके मुँह से निकला ; हे भगवान ! अब तो तू पापा को उठा ले। मुझसे बरदाश्त नहीं होता ! मैं टूट चुकी हूँ।''[१२८]

'बन्द दराजों के साथ' कहानी की नायिका मंजरी की पीड़ा भी बहुत दयाजनक है। जब वह विपिन से अलग होती है तो उसके अकेलेपन की पीड़ा चरम-सीमा तक पहुँच जाती है-

''वह घर के सारे खिड़की दरवाजे खुले रखती थी। फिर भी लगता रहता था कि साफ हवा के अभाव में घर की हवा धीरे-धीरे जहरीली होती जा रही है और कोई है, जो उसके देखते-देखते मरता जा रहा है।''[१२९]

उसकी पीड़ा के चरम-सीमा का चित्रण तब आता है जब उसने दिलीप से दूसरी शादी की। दिलीप ने उसकी नौकरी छुड़वा दी। उसने पति की बात मानकर नौकरी छोड़ दी। लेकिन धीरे-धीरे दिलीप असित को दिये जाने वाले स्कूल फीस व खर्च बंद करने की बातें करने लगा, तब उसकी पीड़ा हृदय द्रावक बन जाती है। क्योंकि असित विपिन का लड़का था। दिलीप का होता तो वह ऐसा कहता कि 'हमने पढ़ाई की थी लेकिन इतनी फीस नहीं भरी थी।' इस कारण वह सोचने लगी -

''विपिन ने केवल अपनी जिन्दगी को ही टुकड़ों में नहीं काटा, कितने कौशल से वह उसकी जिन्दगी को भी टुकड़ों में काट गया है कि आगे उसे सारी जिंदगी ही इन टुकड़ों की अभिशप्त छाया में काटनी होगी कि वह अब कभी भी अपनी संपूर्ण जिन्दगी नहीं जी पाएगी।''[१३०]

आधुनिकता बोध :

''आधुनिकता न तो किसी सीधी स्पष्ट वैचारिकता या रहन-सहन के तौर-तरीके के विकास का रूपान्तरण है और न मात्र समसामयिक सांस्कृतिक क्रांन्ति

का भाव बोध है बल्कि जटिल मानासिकता और नवीनतम मानव-मूल्यों से अदभुत होने वाली वह वैज्ञानिक चेतना है जिसमें विवेक सम्मत दृष्टि, प्रश्नाकुल जिज्ञासा एवं पारिवेशिक जागरुकता सन्निहित है।''[१३१]

डॉ. जगदीश गुप्त का कथन है -

''आधुनिकता सही अर्थ में विवेक पूर्ण दृष्टिकोण से उपजती है जो व्यक्ति को वास्तविक युगबोध प्रदान करने में साथ-साथ अधिक दायित्वशील, सक्रिय और मानवीय बनाता है।''[१३२]

''आज का मनुष्य आधुनिक दृष्टि से सम्पन मनुष्य है। यह वैज्ञानिक दृष्टि का प्रयोग अपने जीवन में करता है परिणामत: वह प्रत्येक स्थिति, दशा, निर्णय व निष्कर्ष को ज्यों का त्यों स्वीकारने की स्थिति में नहीं होता, अपितु उन्हें तर्क की कसौटी में कसकर उनमें कार्य-कारण सम्बंधों की संगतता को ध्यान में रखकर ही निर्णय लेता है।'' [१३३]

आधुनिक बोध के कारण व्यक्ति को नयी दृष्टि मिलती है। वह पुराने रीत-रिवाजों का ज्यों का त्यों नहीं स्वीकारता। इसलिए कभी-कभी समस्याएँ पैदा होती हैं। 'जीती बाजी की हार' कहानी की मुरला विवाह-संस्कार को बोझ समझती है। आशा, उसे शादी के लिए समझाती है तो वह कहती है -

''यह सब तुम लोगों को ही मुबारक हो, शादी करके मैं अपने व्यक्तित्व को नहीं बेच सकती।''[१३४]

मुरला का इस प्रकार बोलना आधुनिक-बोध का ही परिणाम है। 'त्रिशंकु' कहानी की नायिका पिता की इच्छा के विरुद्ध जाकर प्रेम विवाह करती है, जब उसकी माँ कहती है कि तुझे लेकर कितनी महत्वाकांक्षाएं थी हमारे मन में, तब वह कहती है -

''ममी, तुम भी कमाल करती हो। अपनी जिंदगी को लेकर भी तुम सपने देखो और मेरी जिंदगी के सपने भी तुम्हीं देख डालो ... कुछ सपने मेरे लिए भी छोड़ दो।''[१३५]

'एक बार और', 'रानी माँ का चबूतरा', 'कील और कसक' आदि

कहानियों में आधुनिकता बोध का वर्णन कलात्मक ढंग से हुआ है। 'कील और कसक' की रानी शादी को जी का जंजाल मानती है -

"सच पूछो तो जीजी, क्या रखा है ब्याह में भी ? एक बन्धन ही तो है, जी का जंजाल। बिना ब्याह के तो कैसी मस्ती रहती है, नहीं तो पचास झंझट।"[१३६]

संवेदना से सम्बन्धित समस्याएँ :

'संवेदना' संस्कृत का शब्द है। जिसका अर्थ है, सुख-दुःख का अनुभव या ज्ञान या प्रतीक्षा 'संवेदन' शब्द पुल्लिंग है। इसमें 'आ' प्रत्यय लगने से उसका स्त्रीलिंग रूप संवेदना बना है।

कोषगत अर्थ से संवेदना की व्याख्या इस प्रकार कर सकते हैं -

"जीवन का व्यापक अनुभव, ज्ञान या अनुभूति ही संवेदना है।"

राजेन्द्र यादव ने भावुकता और संवेदना के अन्तर को इस प्रकार स्पष्ट किया है -

"मैं यह मानता हूँ कि भावुक लेखक संवेदनशील लोगों की कहानियां नहीं लिख सकता हूँ। हाँ, संवेदनशील लेखक भावुक पात्रों को लेकर मानव मन का सुन्दर अध्ययन दे सकता है। एक्सीडेन्ट से घायल व्यक्ति के प्रति सच्ची दया और सहानुभूति से विचलित होकर उसके उपचार की व्यवस्था-करना, या शान्ति से लोगों के सामने उसके केस को रख देना... इसे मैं मानीवय संवेदना कहूँगा, क्योंकि यहाँ भावना भी है और बुद्धि भी, और दोनों एक दूसरे के लिए प्रणेता है। लेकिन एक्सीडेन्ट से घायल व्यक्ति को, देखकर उससे भी अधिक घबरा जाने और रोने-पीटने वाले आदमी को कमजोर स्नायुओं का भावु व्यक्ति ही कहा जायेगा, जो घायल की सहायता करने से तो रहा, उल्टे अपनी इस कमजोरी से लोगों का ध्यान बंटा देता है।"[१३७]

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सामाजिक चेतना, राजनीतिक चेतना आर्थिक चेतना एवं धार्मिक चेतना में अमूल परिवर्तन आया है। इस कारण भारतीय जन-

जीवन की संवेदनाएँ भी बदलकर हमारे सामने उभरकर आयी। प्रेमचंद के समय में आदर्शवाद एवं आदर्शोन्मुख यथार्थवाद स्पष्ट रूप से उनके कथा साहित्य में उभरकर आया। उनके बाद यथार्थवाद, नग्न यथार्थवाद, विकासवाद, फ्रायडवाद, मार्क्सवाद, अस्तित्ववाद आदि विचार धाराये आज हिन्दी साहित्य में विद्यमान है। फलस्वरूप स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक सभी क्षेत्रों में मूल्य परिवर्तन हो रहा है। उसी प्रकार संवेदनाएँ भी बदलती रहती हैं। उन परिवर्तित संवेदनाओं का व्यापक रूप से चित्रण बीसवीं सदी के सातवें दशक के हिन्दी उपन्यासों एवं कहानियों में उपलब्ध है। इस प्रकार का चित्रण करने में नरेश मेहता , निर्मल वर्मा, श्रीलाल शुक्ल, रामदरश मिश्र, अमृतराय, उषा प्रियंवदा, कमलेश्वर, मन्नू भंडारी आदि लेखक-लेखिकाएँ प्रमुख हैं। उषा प्रियंवदा का उपन्यास 'रुकोगी नहीं राधिका' में युवती परिस्थिति से समझौता नहीं करना चाहती। वह कहती है -

'जो आप चाहते हैं, वही हमेशा क्यों हो ? क्या मेरी इच्छा कुछ भी नहीं ? मैं आप की बेटी हूँ यह ठीक है पर अब मैं बड़ी हो चुकी हूँ और जो चाहँगी वही करूँगी।'

मन्नूभंडारी ने भी 'आपका बंटी' उपन्यास में संवेदना से संबंधित समस्या का मनोवैज्ञानिक रूप से चित्रण किया है।

''बंटी ऐसे माता पिता की सन्तान है जो एक दूसरे से अलग रहने का निश्चय कर चुके हैं। वह स्वयं आठ-दस साल से ज्यादा का नहीं है। शकुन (कॉलेज के प्रिंसीपल), अजय और डॉक्टर के बीच पैदा हुए तनाव के माहौल से वह अपने को उपेक्षित समझता है और चिड़चिड़े स्वभाव का हो जाता है। उपन्यास की मूल संवेदना बंटी की व्यथा या एक संवेदनशील बच्चे की दयनीय दशा है। अपनी मम्मी को अपनी मम्मी न समझकर वह बहुतों की मम्मी समझता है और अपने चारों ओर के परिवेष से घबड़ा कर वह मुक्ति का मार्ग खोजना चाहता है। सबके बीच रहते हुए भी वह अपने पापा के साथ कलकता चला जाता है तो पापा के प्रति भी अपनेपन की भावना ग्रहण नहीं कर पाता। क्योंकि वहाँ

मीरा है। होस्टल में रखे जाने पर तो उसे अपने पापा भी भीड़ के एक अजनबी की तरह लगते हैं। उसके माता-पिता तलाक ही नहीं लेते वरन् अलग-अलग विवाह भी कर लेते हैं। उपन्यासकार ने स्त्री-पुरुष के तनावपूर्ण संबंधों के बीच एक बालक के मानसिक जीवन पर प्रकाश डाला है। वास्तव में शकुन, अजय, डॉक्टर और मीरा सभी अपनी अपनी कुण्ठा और महत्वाकांक्षाओं के लिए अहं की संकीर्ण परिस्थितियों में विचरण करते हैं। वेचारे बंटी का किसी को ध्यान नहीं रहा। लेखिकाने बंटी के जीवन की ट्रेजडी को संयत और निरपेक्ष दृष्टि से चित्रित किया है।''[१३८]

आधुनिक युग में मानव-जीवन आस्था-अनास्था, उदासीनता, टूटन, संत्रास, अलगाव आदि कई संवेदनाओं से प्रभावित है।

संत्रास :

हैड़गर के अनुसार - ''मूलत: संत्रास मनुष्य की यह आधार भूत अनुभूति है कि मनुष्य उस जगत से संबन्धित नहीं है जिसमें वह है और जगत में व्याकुलावस्था में रहता है। इस अनुभूति से पलायमान के लिए तथा इसका परिहार करने के लिए जब मनुष्य प्रयास करता है तो संत्रास उसका पीछा करता है। भय से भिन्न, जिसका कि कोई निश्चित तथा विशिष्ट कारण होता है, संत्रास किसी वस्तुविशेष को स्रोत मान कर उससे उत्पन्न नहीं होता, अत: कोई दिशा ऐसी नहीं होती जिसमें इस को खोजा जा सके। अपितु संसार ही जैसा वह है, वह वस्तु है जिसके संमुख होने पर किसी को व्याकुलता (Anxiety) होती है।''

मन्नूभंडारी की कहानियों एव उपन्यासों में उक्त समस्या का चित्रण हुआ है। उनकी 'शायद', 'बंद दराजों का साथ', 'ईसा के घर इन्सान' आदि कहानियों में उक्त समस्या का चित्रण मिलता है।

'शायद' कहानी का राखाल जब जहाज पर की नौकरी से वापस आता है तो उसे अपने परिवार के असुरक्षित होने का ख्याल खाये जाता है। वह उस समय त्रासद स्मृतियों के घेराव में सोचा करता है -

"बच्चू...अब पहले की तरह निश्चित होकर बस्ता कोन में पटक, शंकर के गराज या फुटपाथों पर खेलता फिरेगा। रीना घर के काम से छुट्टी पाते ही कपूर साहब के बरामदे में खड़ी होकर बतियाया करेगी। छोटू शंकर के कन्धे पर टँगकर उसके सिर पर तबला बजाया करेगा।"[१३९]

'तीन निगाहों की एक तस्वीर' कहानी की दर्शना को कंकाल पति से इतना डर है कि मेडिकल कॉलेज में एक कंकाल को देखकर उसे यह दहशत हो जाती है -

"पर इस भय से कैसे मुक्ति पाऊँ ? घर के जिस कोने में भी जाती हूँ, वह कंकाल मुझे दबोचने को चला आता है, जैसे मुझे वह मारकर ही छोड़ेगा ?"[१४०]

'ईसा के घर इंसान' कहानी में गिरजाघरों में होनेवाले मानसिक संत्रास से सिस्टर्स फादर के प्रयोगों से इतनी दु:खी है वह उन्हें सफेद चिड़ियाँ महसूस करती है। जिसके पंजों में दबोचे जाकर उसे दम घुटने की फीलिंग होती है। 'घुटन' की मोना एवं 'बंद दरवाजों के साथ' की मंजरी भविष्य से सम्बन्धित अनिश्चितता से संत्रस्त है। वह भविष्य की असुरक्षा और भय की चिन्ता से बहुत दु:खी है।

'तीसरा आदमी' का सतीष अपनी पत्नी शकुन एवं लेखक आलोकजी को एक कमरे में बंद देखकर संदेहशील हो जाता है, उस घटना को वह भूल नहीं पाता। वह यह संत्रास अनुभव करता है-

"थोड़ी देर बाद सतीश उठा और साइकिल पर बैठकर चल पड़ा। उसे लगा था कि वह थककर चूर-चूर हो गया और भीतर ही भीतर इस तरह टूट गया है कि उसका सब कुछ एक दम जड़ और सुन्न हो गया है। कुछ भी सोचने-समझने की शक्ति उसमें नहीं रह गई।"[१४१]

'सयानी बुआ' की बुआ अपनी बेटी अन्नू की मृत्यु की कल्पना से संत्रास अनुभव करती है जैसे -

"सपने में देखा है कि भाई साहब अकेले चले जा रहे है, अन्नु साथ नहीं है और उनकी आँखे भी लाल हैं।"[१४२]

मन्नू भंडारी के 'एक इंच मुस्कान' में भी उपर्युक्त समस्या का चित्रण मिलता है। इस उपन्यास की रंजना अपने अतीत से संत्रस्त होकर महसूँसती है -

"मेरा मन कहीं नहीं लगता है। लगता है मन के भीतर कहीं कुछ कोमल था जिसे मैंने बड़ी निर्ममता से कुचल दिया है ... तब से बस एक ही भावना है, जो हर क्षण मन पर छायी रहती है। नर्सिंग होम की बेहद चौड़ी सीढ़ियाँ एक किनारे से नर्स का सहारा लिए मैं उतर रही, दूसरे किनारे से अमर उतर रहे थे और मुझे लगा था, हम दो ऐसे किनारे हैं, जिन्हें अब कोई सेतु नहीं बांध सकेगा... हम कभी एक नहीं हो सकेंगे। साथ रहकर भी दूर ... एक होकर भी अलग। सब कुछ ठीक कर देने वाला कोई 'चीको' नहीं होगा और हमारी जिन्दगी यों ही बीत जायेगी-नीरस, शुष्क, अवसादपूर्ण .....।"[१४३]

'अपका बंटी' का बंटी संत्रस्त ग्रस्त दिखायी देता है। बंटी घर में सभी सदस्य होते हुए भी अकेलेपन मेहसूस करता है -

"सारा घर अंधेरे में डूब गया। बंटी के मन का दु:ख और गुस्सा धीरे-धीरे डर में बदलने लगा। केवल डर ही नहीं एक आतंक, कैसी-कैसी शक्लें उभरने लगीं उस अंधेरे में। उसने कसकर आंखे मींच लीं। पर अजीब बात है, बन्द आंखों के सामने शक्लें और भी साफ होगई - लपलपाती जीभ के राक्षस... उल्टे पंजे और सींगो वाला सफेद भूत, तीन आँखों वाली चुड़ैल, जादुई नगरी के नाचते हुए हड्डियों के ढाँचे सब उसके चारों ओर नाच रहे हैं ? धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ रहे हैं।"[१४४]

'महाभोज' में बिस्सू की हत्या होती है। बिस्सू का हत्यारा जमींदार जोरावर है। जो कि राजनीतिक गुण्डा भी है। इस गुंडेकी वजह से सारा गाँव संत्रस्त है। बिस्सू का बाप हीरा खूनी को जानता है, फिर भी डी.आई.जी. सक्सैना के पूछने पर यह कहता है -

"हम का बताई सरकार ..... पर सारा गाँव .... । ... सारा गाँव जोरावर सिंह का नाम ले रहा है, सरकार। तुम्हें भी शक है जोरावर पर ? हम का शक कर सकें, सरकार। आंखिन से देखे बिना केहिका नाम लइलें ?"[१४५]

इस प्रकार मन्नूभंडारी के कथा साहित्य में संत्रास के विविध रूपों का चित्रण किया गया है; जैसे अतीत का संत्रास, उच्च वर्गीय संत्रास, अप्राकृतिक मृत्यु का संत्रास, अनिश्चित जीवन का संत्रास आदि उसके कथा साहित्य में विद्यमान हैं।

उदासीनता :

स्वतंत्रता के बाद देश में चारों ओर तनाव, असंतोष, विवशता, उदासीनता फैल गई। देश के विकास के लिए सरकार ने अनेक नयी-नयी योजनाएँ बनाई, लेकिन सफल नहीं हुई। औद्योगिकरण, बढ़ती हुई जन संख्या, विज्ञान आदि के कारण समाज में अनेक सामाजिक, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक समस्याएँ पैदा हुई। मानव इन समस्याओं उलझता गया। वह इसमें से बाहर निकलने के लिए अनेक प्रयत्न करता रहा। किन्तु आर्थिक विपन्नता, आधुनिकता एवं मानसिक असंतोष के कारण उसके जीवन में उदासी छा गई। मानव शोर अंधकार में लय हो गया। विज्ञान की विनाशक खोजों के कारण विदेशी आक्रमण का भय मानवजीवन को उदास करता रहा। इस उदासीनता का चित्रण अनेक लेखकों ने अपने कथा साहित्य में उभारा है। मोहन राकेश ने 'अंधेरे बन्द कमरे' तथा 'निर्मल वर्मा' ने 'वे दिन' नामक उपन्यास में उसका सुंदर ढंग से चित्रण किया।

मन्नू भंडारी भी इससे अछूती नहीं रहीं। उन्होंने अपनी कई कहानियों में उदासीनता का चित्रण किया है। 'एक कमजोर लड़की की कहानी', 'घुटन', 'मजबूरी', 'हार', 'शायद', 'सजा', 'बन्द दराजो का साथ', 'बांहों का घेरा', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर' आदि कहानियाँ उनका श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

'बाँहों का घेरा' कहानी की कम्मो पति की अत्यधिक व्यस्तता के कारण वह बहुत उदासीन है। जैसे -

''हल्के बादलों की परत के नीचे चाँद बड़ा निस्तेज-सा लग रहा था। सींखचों के पार का चाँद कम्मो को बन्दी की तरह दिखाई दे रहा था, इस कैद ने ही शायद उसकी चमक हर ली। पर्दा वापस खींचकर वह छत पर चली गई। मुंडेर पर खड़े होकर वह कभी आसमान को देखती तो कभी सड़क को। सड़क पर

कोलाहल था, पर वह कोलाहल भी उसके मन की शून्यता को नहीं भर पा रहा था।''[१४६]

'एक कमजोर लड़की की कहानी' रूप शून्यता, उदासीनता से ग्रस्त है। वह अनुभव करती है -

''बस और जो है ठीक है, जिन्दगी को घसीट रही हूँ या जिन्दगी मुझे घसीट रही है, कुछ भी समझ लेना, एक ही बात है।''[१४७]

तत्कालीन न्याय पद्धति की भ्रष्टता एवं खामियों का चित्रण 'सजा' नामक कहानी में मिलता है। उस कहानी में एक निर्दोष व्यक्ति अदालती कार्यवाही पूरी होने तक दोष-मुक्त सिद्ध होने पर भी उसका परिवार मानसिक रूप से सजा भोग चुका है। उसकी पत्नि एवं बच्चे आर्थिक विपन्नता के कारण जिन यातनाओं को झेला, वह सजा किसी अदालत द्वारा की जानेवाली सजा से भी भयंकर थी। इस कहानी में मध्य पारिवारिक सदस्यों की उदासीनता का चित्रण देखने को मिलता है -

''अब तो मुझे लगने लगा था कि जैसे जिन्दगी भर हमें इसी तरह रहना है, बस, इसी तरह। अब मैं कभी कॉलेज में पढ़ने नहीं जाऊँगी। मन्नू हर साल एक विषय में फेल होकर जैसे-तैसे प्रमोट हुआ करेगा। अम्मा शायद हमेशा बीमार रहकर मामा के यहाँ इलाज करवाती रहेगी .....।''[१४८]

'शायद' कहानी का राखाल जिन्दगी से उदासीन है। पत्नी के प्रति लगाव, प्रेम, आकर्षण आदि की बात तो दूर निराशा की स्थिति में वह स्वयं को पराया महसूस करता है मृत पुत्री के संबंध में सुनते-सुनते वह इतना ऊब जाता है -

''जो चली गई, उसका ख्याल है और जो आया है, उसकी कोई चिन्ता नहीं, जाने क्यों उसे लगने लगा जैसे वह किसी और के बारे में सुन रहा है।''[१४९]

'बंद दराजों का साथ' कहानी की मंजरी निराशा और उदासीनता से प्रभावित पात्र है। उसके जीवन में समर्पण की भावना की जगह उपेक्षा , संदेह और अविश्वास ने ले लिया। उसे हर काम फालतू लगता है। वह सोचती है -

''अब स्नेह का स्थान सन्देह ने ले लिया था और तर्कों ने सदभावना के

रेशे-रेशे उधेड़ दिये थे ... वह घर के सारे खिड़की-दरवाजे खुले रखती थी फिर भी। उसे लगता रहता था कि साफ हवा के अभाव में घर की हवा धीरे-धीरे जहरीली होती जा रही है और कोई है, जो उसके देखते-देखते मरता जा रहा है। न वह उसे बचा सकती है और न ही निर्दयतापूर्वक मार सकती है।''[१५०]

उपर्युक्त कथन में उदासीनता का सुन्दर यथार्थ चित्रण हुआ है।

अलगाव (Alienation) :

अलगाव का मतलब अलग होना है, दूसरे शब्दों में कहें तो मूल्यों की विसंगति की समस्या। जब मनुष्य सामाजिक मूल्यों को स्वीकार नहीं करता और अपने निजी मूल्यों को प्रस्थापित करने के लिए उसे बहुत संघर्ष करना पड़ता है। औद्योगिक प्रतिष्ठानों एवं टेक्नोलॉजीकल संस्थाएं बढ़ जाने के कारण आदमी नगण्य हो गया है। आदमी अपनों के भीतर भी पराये पन महसूस करता है। वह बाजार की लम्बी भीड़-भाड़ में भी अकेलेपन की या अलगाव बोध की स्थिति महसूस करता है।

अलगाव बोध को समस्या भी मन्नू भंडारी के कथा -साहित्य में विद्यमान है। मन्नूजी की 'अकेली', 'शायद', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', 'एखाने आकाश नाई' आदि कहानियों में उपर्युक्त की समस्या का अंकन हुआ है।

'अकेली' कहानी की सोमा बुआ पुत्र के निधन उपरांत और पति के सन्यासी होने के बाद अकेलेपन की स्थिति महसूस करती है। वह प्रत्येक व्यक्ति के साथ सुख-दु:ख में संबंध रखकर भी परायेपन के भावबोध से मुक्त नहीं हो पाती। आज सामाजिक प्रतिष्ठा का आधार धन-वैभव, पद, मान-सम्मान ही है, आत्मीयता पूर्ण व्यवहार नहीं। अगर ऐसा न होता तो सोमा बुआ सबके आदर की अधिकारिणी जरूर होतीं।

'तीन निगाहों की एक तस्वीर' की दर्शना अतृप्त काम की तृप्ति के लिए हरीश के संपर्क में आती है। हरीश के संपर्क में जाना परीस्थितियों की उपज है, लेकिन समाज उसे चरित्रहीन मानता है। वह स्वावलम्बी होने के बावजूद अलगाव

बोध से यहाँ तक पीड़ित है कि अकेलेपन से दुखी होते-होते जीवन को खत्म कर देती है।

'शायद' कहानी की राखाल जब नौकरी करता है तो परिवार से बहुत दूर रहता है। अनगिनत कल्पनाएँ आती रहती हैं। वह पत्नी और बच्चों को मिलने के लिए आतुर है। जब वह घर पहुँचता है तो उसकी पत्नी माला उसकी अपेक्षा मृत बच्ची की स्मृतियों में अधिक लीन है। वह देखकर राखाल बहुत उदास गुमसुम हो जाता है। उसकी इस मानसिकता का चित्रण निम्न लिखित उदाहरण के द्वारा देख सकते हैं -

"उसे माला पर क्रोध-सा आने लगा। जो चली गई, उसका ख्याल है और जो आया है, उसकी कोई चिन्ता नहीं। जाने क्यों उसे लगने लगा, जैस वह किसी और के बारे में सुन रहा है। मानो उस मृत बच्ची से, माला के दु:ख से, उसका अपना कोई संबंध नहीं है।"[१५१]

मनोविश्लेषणात्मक पद्धति से संबंधित समस्याएँ :

मन्नूभंडारी जी ने मनोविश्लेषणात्मक पद्धति के द्वारा भी कुछ-कुछ समस्याओं का चित्रण किया है।

स्मृत्यात्मकता से ग्रस्त चरित्र :

'आपका बंटी' में उपर्युक्त मनोस्थिति का सुंदर चित्रण मिलता है। आपका बंटी की नायिका एकाएक अपने पति के साथ बिताये समय को याद करती है। वह जितने भी दिन-रातें अजय के साथ बितायी उसका मूल्यांकन करती हुई सोचती है -

"शुरू के दिनों से ही एक गलत निर्णय ले डालने का एहसास दोनों के मन में बहुत साफ होकर उभर आया था.... समझौते का प्रयत्न भी दोनों में केवल एक अंडरस्टैंडिंग पैदा करने के लिए नहीं होता था, वरन् एक-दूसरे को पराजित करके अपने अनुकूल बना लेने की आकांक्षा से तर्कों और वहसों में

दिन बीतते थे और ठंडी लाशों की तरह लेटे-लेटे दूसरे को दु:खी और बेचैन तथा छटपटाते हुए देखने की आकांक्षा में राते।''[१५२]

इस प्रकार दोनों अहं ग्रस्त थे। उसके पीछे बुद्धजीवी का गुण विद्यामान था। बंटी और शकुन का नये घर जाना और वहाँ जाकर बंटी को पुराने घर की याद आना बंटी की मन: स्थिति का परिचायक है। वह नये वातावरण को एड्जस्ट नहीं कर पाता।

'एक इंच मुस्कान' में भी स्मृत्यात्मक चित्रण मिलता है।

अमला जब परदों को सरका-सरकाकर खिड़कियाँ खोलती है तब उसे कैलाश की बातें याद आती है -

'एक तो औरतों के मन की थाह पाना योंही सरल नहीं, फिर तुमने तो अपने मन के खिड़की दरवाजों पर ऐसे भारी-भारी पर्दे लगा रखे हैं कि कोई झांक तो ले भला! पर याद रखना अमला, एक दिन मैं उसमें झांककर ही रहूँगा, तुम्हारी इन बातों, इन आदतों और इस मुसकान के आवरण में इसी मन की अतल गहराइयों को टटोलकर ही छोडूंगा। शायद, वह दिन अब बहुत दूर नहीं जब तुम्हारे इतने निकट आने का अवसर मिलेगा... या कौन जाने एक दिन ऐसा ही आए जब तुम स्वयं ये सब आवरण उतारकर मेरे पास आओ।''[१५३]

रंजना उस शाम को नहीं भूल पायी जिस शाम को उसका अमर उस से बहुत दूर चला गया था।

''जुहू की वह भयावनी सांझ आज भी याद है। उस दिन समुद्र की उन लपलपाती विकराल लहरों ने केवल सूर्य को ही नहीं निगला था।''[१५४]

'बाहों का घेरा' कहानी की कम्मो का अधिकांश समय बचपन की स्मृतियों को ताजा करने में बीतता है। वह अपने पति मित्तल से कामअतृप्ति महसूस करने पर -

''याद आया, बचपन में भी वह ऐसे ही बिस्तर पर पड़कर रोया करती थी और उसका मन होता था कि वे बाँहें उसे कस लें पर उन्होंने उसे कभी नहीं कसा, वे केवल मन को टीसती ही रही।''[१५५]

उसके प्रेमी शैलेन के पत्र के वाक्य उसके कानों तक बार-बार टकराते हैं -

"कम्मो, मैं तुम्हारे बिना कितना अकेला हूँ, कितना असहाय। मुझे अपनी बाँहों के घेरे में बाँध लो कम्मो ...।"[१५४]

'चश्मे" कहानी में निर्मल व शैल का प्रेम सम्बंध और शैल की बीमारी एवं मौत का वर्णन स्मृति दृश्य द्वारा किया गया है -

"शैल का नाचता हुआ जर्द, कुम्हलाया हुआ .... जिसमें न कोई सौंदर्य है न कोई आकर्षण और न इनकी संभावना ही...."[१५७]

'एक बार और' कहानी में भी बिन्नी और कंज के पारस्परिक सम्बन्धों में स्मृतिदृश्य का चित्रण किया गया है। कुंज के द्वारा बिन्नी को कहे हुए वाक्य बार-बार याद आते हैं।

"बिन्नी, शादी मुझे इतना संकीर्ण नहीं, बना सकेगी कि मैं अपने सारे सम्बन्धों को झुठला ही दूँ! शादी अपनी जगह रहेगी और मेरा तुम्हारा सम्बन्ध अपनी जगह।"[१५८]

इस प्रकार मन्नू भंडारी ने अपने कथासाहित्य में अनेक जगह पर स्मृत्यात्मक मनोविश्लेषणात्मक पद्धति का चित्रण किया है।

अन्तर्विवाद :

"चरित्रों का मानसिक संघर्ष को व्यक्त करने के लिए उपन्यासकार ऐसे अन्तर्विवाद प्रस्तुत करता है। जिसमें न तो कोई वक्ता होता है और न कोई श्रोता ही। पाठक पात्र की हृदयगत भावना से प्रत्यक्षतः परिचित हो जाता है।"[१५९]

कुल मिलाकर हम कह सकते हैं किसी भी व्यक्ति, घटना परिस्थिति लेकर स्वयं से किये गये तर्क-वितर्क ही अन्तर्विवाद है।

मन्नूजी के कथा साहित्य में अन्तर्विवाद मनोविश्लेणात्मक पद्धति द्वारा सुंदर रसपूर्ण ढंग से चित्रित किया गया मिलता है। 'एक इंच मुस्कान' इसका

[stamp]

श्रेष्ठ उदाहरण है। अमला, अमर एवं कैलाश को लेकर अपने मन में अन्तर्विवाद करती है -

"वह अमर से क्या चाहती है? अमर को लेकर ही तो क्या उसने कैलाश से झगड़ा नहीं कर लिया? रंजना से सम्बन्ध तोड़ लेने के लिए नहीं उकसाया? पर आखिर क्यों? अमर अच्छा लिखता है, और वह चाहती है कि अमर एक से एक सुंदर कृतियों का सृजन करे... वह अच्छी तरह जानती है, अमर उसकी जीवन यात्रा का सम्बल कदापि नहीं बन सकता है। पर क्या कैलाश बन सकता था... ? क्या वह उसके साथ सुखी जीवन बिता सकती थी?"[१६०]

'आपका बंटी' उपन्यास में बंटी का अन्तर्विवाद क्रोध के साथ व्यक्त हुआ है। वह मम्मी पापा को एक साथ देखना चाहता है। इस लिए अपने आपसे अन्तर्विवाद करता है -

"मम्मी को क्या कभी पापा की याद नहीं आती? वह तो टीटू या कुन्नी से अगर लड़ाई कर लेता है तो दो-तीन दिन तो बिना बोले रह लेता है। अकेला-अकेला खेलता रहता है, पर उसके बाद तो ऐसा जी घबराने लगता है कि बोले बिना रहा ही नहीं जाता। कुछ न कुछ बहाना निकालकर फिर दोस्ती कर लेता है। अकेला-अकेला खेले भी कितने दिन तक आखिर? पर ममी तो हमेशा से ही अकेली रह रही हैं। तलाक में फिर क्या दोस्ती हो ही नहीं सकती? किस से पूछे?"[१६१]

आगे भी अजय द्वारा मीरा से ब्याह कर लेने के पश्चात वकील चाचा शकुन को पुनर्विवाह करने के लिए प्रेरणा देते हैं तब शकुन के मन में यह अन्तर्विवाद चलने लगा - "अजय को उसे दिखा ही देना है, कि वह अगर एक नई जिन्दगी की शुरुआत कर सकता है तो वह भी कर सकती है। नहीं उसे किसी को कुछ नहीं दिखाना है। जो कुछ भी करना है अपने लिये करना है।"[१६२]

शकुन जब अजय के साथ बिताये दाम्पत्य जीवन के बारे में सोचती है तो स्पष्ट होता है कि उसका मन क्या कह रहा है?

"... निष्कर्ष हमेशा एक ही निकला है कि दोनों ने एक-दूसरे को कभी

प्यार किया ही नहीं।.. समझौते का प्रयत्न भी दोनों में एक अंडर स्टेंडिंग पैदा करने की इच्छा से नहीं होता था वरन् एक दूसरे को पराजित कर के अपने अनुकूल बना लेने की आकांक्षा से। तर्कों और बहसों में दिन बीतते थे और ठंडी लाशों की तरह लेटे-लेटे दूसरे को दु:खी, बेचैन और छटपटाते हुए देखने की आकांक्षा में रातें। भीतर ही भीतर चलने वाली एक अजीब ही लड़ाई थी वह भी, जिस में दम साधकर दोनों हर दिन प्रतीक्षा की थी कि कब सामने वाली साँस उखड़ जाती हैं और वह घुटने टेक देता है जिससे कि फिर वह बड़ी उदारता और क्षमासीलता के साथ उसके सारे गुनाह माफ करके उसे स्वीकार कर ले, उसके संपूर्ण व्यक्तित्व को निरे एक शून्य में बदलकर।... दोनों के ही शंकालुमनो ने कभी उन्हें उस रूप में ग्रहण ही नहीं किया। दोनों ही एक-दूसरे की हर बात हर व्यहवहार और हर अदा को एक नया दांव समझने को मजबूर थे और इस मजबूरी ने दोनों के बीच की दूरी को इतना बढ़ाया, इतना बढ़ाया कि फिर बंटी भी उस खाई को पाटने के लिए सेतु नहीं बन सका... साथ रहने की यंत्रणा भी बड़ी विकट थी और अलगाव का त्रास भी।''[१६३]

'स्वामी' उपन्यास में मिनी का अन्तर्विवाद द्दष्टव्य है। वह पुराने संस्कारों को तोड़ना चाहती है। वह बहुत दु:खी है। एक जगह वह कहानी है -

''हम लोग पढ़-लिख, सोच-विचार कर बौधिक रूप से तो बहुत आगे बढ़ जाते हैं.. बहुत बड़ी-बड़ी बातें सोच डालते हैं और केवल सोचते ही नहीं, उन्हें करने के लिए कदम बढ़ाते है, पर उतना सब-कर नहीं पाते। सदियों पुराने संस्कार हमें पीछे खींचते हैं।''[१६४]

'तीसरा आदमी' कहानी में तो अन्तर्विवाद चरमसीमा पार कर चुका है। इस कहानी का नायक अपने आपको नामर्द समझता है। वह अपनी पौरुषहीनता के कारण अपनी पत्नी के बारे में गलत धारणा बाँध लेता है। जब उसके घर उसकी पत्नी का साहित्यिक मित्र आता है तो वह यह सोचने लगता है -

''जिस शकुन को पिछले पाँच साल से वह अपने शरीर को अभिन्न अंग की तरह प्यार करता आ रहा है, वह इस समय किसी और की बाँहों में पड़ी मस्ती

मार रही होगी... और वह है जो बेघरबार होकर यों दर-दर भटक रहा है ।... उसे लगा, वह सचमुच ही पौरुषहीन है । कोई मर्द बच्चा होता, तो दो लात मारता दरवाजे को, और झोंटा पकड़कर बाहर कर देता शकुन को और दो झापड़ मारता उस लफंगे को । उसके सारे अस्तित्व को बुरी तरह मथता हुआ आज यह विश्वास पूरी तरह उसके मन में जम गया कि वह पुरुष नहीं है.. और उसे लगा यह बात तो बहुत पहले से ही जान गया था, तभी तो पूरी तरह सिद्ध कर दिया। लानत है उस पर। थू ! उसने सामने पानी में थूक दिया । कोई असली मर्द बच्चा होता तो... उसे अपने-आपसे नफरत होने लगे । ठीक ही तो किया शकुन ने । कौन और ऐसे ना-मर्द की पत्नी होकर रहना पसन्द करेगी ।''[१६५]

सतीश का यह अन्र्तविवाद चरम सीमा को लाँग जाता है ।

'यही सच है' कहानी में भी मन्नूजी ने सुक्ष्म से सूक्ष्म, सशक्त अन्र्तविवाद का चित्रण किया है । कभी संजय के स्पर्श को लेकर अपने अन्र्तमन में यह विवाह पनप उठता है -

''तुम्हारे असंख्य आलिंगनों और चुम्बनों के बीच भी एक क्षण के लिए भी तो मैंने कभी तन-मन की सुध बिसरा देने वाली पुलक या मादकता का अनुभव नहीं किया ... उस स्पर्श को मैं भ्रम कैसे मान लूं , जिसने मेरे तन-मन को डुबो दिया था, जिसके द्वारा उसके हृदय की एक-एक परत मेरे सामने खुल गई थी।''[१६६]

दीपा जब यही संजय के स्पर्श को पुन: प्राप्त करती है तो वह उस स्पर्श को लेकर इस अन्तर्विवाद में पड़ जाती है -

''यह स्पर्श, यह सुख, यह क्षण ही सत्य है, वह सब झूठ था, मिथ्या था, भ्रम था।...''[१६७]

यही दीपा जब निशीथ का स्पर्श पाती है तो उसका अंतरमन यह कह उठता है -

''मैं सब समझ गई निशीथ, सब समझ गई, जो कुछ तुम इन चार दिनों में नहीं कह पाये वह तुम्हारे इन क्षणिक स्पर्श ने कह दिया।... मुझे लगता है यह

स्पर्श, यह सुख, यही सत्य है, बाकी सब कुछ झूठ है अपने को भूलने का भरमाने का, छलने का प्रयास है।''[१६८]

इस प्रकार दीपा, निशीथ और संजय को लेकर कोई निर्णय नहीं ले पाती। कभी उसका अन्तर्मन निशीथ के प्रेम को सच मानता है तो कभी उसका अन्तर्मन संजय के प्रेम सच को। यह अन्तर्विवाद कहानी में निरंतर चलता रहता है। मन्नूजी ने अपने कथा साहित्य में अनेक जगह पर इस मनोविश्लेषणात्मक पद्धति का चित्रण किया है।

स्वप्न विश्लेषण :

स्वप्न विश्लेषण पद्धति का चित्रण थी मन्नूभंडारी जी ने अपने कथा-साहित्य में किया है। स्वप्नों के माध्यम से पात्रों के आन्तरिक भावनाओं, अतृप्त इच्छाओं तथा कुंठा का चित्रण लेखिका ने किया है।

'आपका बंटी' उपन्यास में लेखिका ने स्वप्न विश्लेषण पद्धति द्वारा पारिवारिक विसंगतियों को बीच पल रहे एक यातनाग्रस्त बंटी के अन्तर्मन की गहराई तक जाने का प्रयास किया है। बंटी को परियों की कहानियाँ सुनने का बहुत शौक है। इसी कारण उसके अचेतन मन में उस कहानियों का अंश पड़ा रहता है। जैसे-

''जब तक आँखें खुली हैं, नज़र कमरे की दीवारों में कैद है, पर आँख बंद करते हैं जैसे सारी सीमाएं टूट जाती है और न जाने कहाँ-कहाँ के जंगल, पहाड़ और समुद्र तैर आते हैं आँखों के सामने। परीलोक की परियाँ और पाताल लोक की नाग-कन्याएँ तैरती हुई उसके सामने निकल जाती है।''[१६९]

बंटी जब डॉ. जोशी के घर रहने जाता है तब शकुन एवं डॉ. जोशी को हम बिस्तर देखने के बाद बंटी स्वप्न में भी अजीब सी हरकतें देखता दिखाई देता है। डॉ. जोशी से उसकी मम्मी की शादी हो जाने के बाद वह ऐसा महसूस करता है कि ममी उसकी उपेक्षा करती है। इस कारण वह बुरे स्वप्न देखता है। वह - ''अपने बच्चे को खा जाने वाली सोनल रानी का स्वप्न देखता है।''[१७०]

बंटी के सपनों के मूल में उसका अकेलापन, उपेक्षा, अहं भावना का भाव विद्यमान है। 'ईसा घर इंसान' की नायिका यह स्वप्न देखती है - ''एक बड़ी-सी सफेद चिड़िया आकर मुझे अपने पंजे में दबोचकर उड़ाये जा रही है और उसके पंजों के बीच मेरा दम घुटा जा रहा है।''[१७१]

यह स्वप्न नायिका की आन्तरिक घुटन व भय का परिणाम है।

'तीन निगाहों की तक तस्वीर' कहानी की दर्शना स्वप्न देखती है -

''छोटी-छोटी पहाड़ियों की चोटियों से जल के झरने-झर रहे हैं। पर फिर भी आस-पास कहीं हरियाली नहीं, रेगिस्तान ही रेगिस्तान है। कोई उस जल को पीने वाला नहीं; कोई फल-फूल उस जल से खिलनेवाला नहीं। विचित्र संयोग था, जल के किनारे निर्जन रेगिस्तान ! जल की इससे बढ़कर और क्या निरर्थकता हो सकती है ? पर यह भी कोई सपना हुआ भला ?''[१७२]

यहाँ दर्शना की मानसिक स्थिति का यथार्थ चित्रण मिलता है। उसमें मन्नूजी ने दर्शना की कुंठा, घुटन का चित्रण किया है।

निराधार प्रत्यक्षीकरण :

''स्वान की भाँति निराधार प्रत्यक्षीकरण (हेल्युसिनेशन) भी व्यक्ति की मनोरंजना है। व्यक्ति की आन्तरिक इच्छाएँ ही स्वप्न रूप में प्रकट होता है इसी प्रकार जागत अवस्था में कतिपय कारणों से व्यक्ति को स्वप्नवत निराधार भ्रांति होती है जो यथार्थ ही उसे प्रतीत होती है। मानसिक विकृति ग्रस्त पात्र को यह अनुभूति साधारण मानव की अपेक्षा अधिक होती है। चरित्र अपनी इच्छापूर्ति के लिए निराधार प्रत्यक्षीकरण का शिकार हो जाता है।''[१७३]

'आपका बंटी' उपन्यास में बन्टी अपनी ममी को डॉ. जोशी के हमविस्तर देखने के बाद कलास में भी निराधार प्रयक्षी करण करने लगता है।

'एक इंच मुस्कान' में अमर भी निराधार प्रत्यक्षीकरण का शिकार हो जाता है। वह -

''अलिफ लैला को सिन्दबाज की तरह देश-देश भटकते हुए अपनी

जिन्दगी काट दे.... किसी खलिहान के किनारे दो रोटियाँ खा लिया करे और किसी अलाव के चारो ओर बैठे लोगों को भूतों और जिनो की कहानियाँ सुन-सुनाकर राते बिता दिया करे... कभी बरसते पानी में अनजान द्वार को खटखटाकर शरण माँगे और कभी किसी अजनबी का सामान लेकर साथ-साथ चले ... कभी किसी अपाहिज को उसके घर तक छोड़ दे, जहाँ उसकी बेटी उसकी राह देख रही हो।''[१७४]

'बाँहों का घेरा' कहानी की कम्मो काम अतृप्ति कारण चाँद में ही निराधार प्रत्यक्षी करण करने लगती है।

''कम्मो को पूरा चाँद कभी अच्छा नहीं लगा। पता नहीं लोगों को उसमें क्या सौन्दर्य दिखाई देता है जो अपने-आपमें पूर्ण है जिसे किसी की अपेक्षा नहीं, कितना संतुष्ट है वह भी, और जहाँ रस नहीं वहाँ सौन्दर्य कैसा ? दूज का चाँद-पतली अर्ध चन्द्रकार रेखा-मानो किसी को कस लेने के लिए बाहों का घेर बनाकर बैठा हो।''[१७५]

कभी कभी तो कम्मों को ऐसा लगता है जैसे -

''घड़े का पानी गिलास का दूध जम गया है। घर में कहीं तरलता नहीं है। सब कुछ ठोस हो गया है या एक दम जड़।''[१७६]

''तीन निगाहों की तस्वीर'' की नायिका दर्शना मेडिकल कॉलेज में हड्डियों का ढाँचा देखने के बाद इतनी भयभीत हो जाती है कि वह बार-बार निराधार-प्रत्यक्षीकरण का अनुभव करती है।

''आज मेडिकल कॉलेज गई थी। मैंने वहाँ हड्डियों का ढाँचा देखा। देखकर ही जाने कैसा विचित्र भय मेरे मन में समा गया। एक दहशत-सी छा गई। मुझे लगा, उस कंकाल ने अपने दोनों हाथ फैलाना शुरु किया और मुझे दबोच लिया। उसकी पकड़ कसती जा रही थी और मुझे लग रहा था जैसे कोई मेरे शरीर का रक्त सोखे जा रहा है।''[१७७]

'तीसरा आदमी' कहानी में सतीश अपनी पत्नी का लेखक मित्र को मिलने के कारण निराधार-प्रत्यक्षीकरण का भोग हो जाता है। जब वह उसके घर में

शकुन से बातें करते देख लेता है तो वह सोचता है -

"जिस शकुन को पिछले पाँच साल से वह अपने शरीर के अभिन्न अंग की तरह प्यार करता आ रहा है; वह इस समय किसी और की बाँहों में पड़ी-मस्ती मार रही होगी .... और वह है जो बे-घरबार होकर यों दर-दर भटक रहा है।"[१७८]

निराधार प्रत्क्षीकरण के कारण व्यक्ति मानसिक रोग से ग्रस्त हो जाता है। वह सोचता है कि शकुन और उसका लेखक मित्र दोनों अब न जाने क्या-क्या करते होंगे। वह तो अपने आपको नामर्द तक समझने लगा। दोनों को घर में अकेले देखकर वह सोचता है - "उसे लगा, वह सचमुच ही पारुषहीन है। कोई मर्द-बच्चा होता तो दो लात मारता दरवाजे को, और झोंटा पकड़ कर बाहर कर देता शकुन को और दो झापड़ मारता उस लफंगे को। उसके सारे अस्तित्व को बुरी तरह मथता हुआ आज यह विश्वास पूरी तरह उसके मन में जम गया कि वह पुरुष नहीं है।"[१७९]

निराधार प्रत्क्षीकरण के रोग से पीड़ित सतीश इतना शिकार होता है कि वह - "भीतर ही भीतर से इस तरह टूट गया है कि उसका सब कुछ एकदम जड़ और सुन्न हो गया है। कुछ भी सोचने-समझने की शक्ति उसमें नहीं रह गई। यहाँ तक कि उसे यह भी नहीं मालूम कि वह कहाँ जा रहा है?"[१८०]

निराधार अप्रत्यक्षीकरण के पीछे-व्यक्ति कोई न कोई मनोवैज्ञानिक समस्या का शिकार होता है। मन्नूजी ने इस मनोविश्लेषण पद्धति के साथ-साथ चेतना प्रवाह पद्धति का भी चित्रण किया है।

निष्कर्ष :

अध्याय के समग्रावालोकन के उपरांत हम सहज रूप से निम्न लिखित निष्कर्षों तक पहुँच सकते हैं -

१. पिछले कुछ शतकों में फ्रायड, एडलर, युंग, पावलोव इत्यादि मनोवैज्ञानिकों ने जिन मनोवैज्ञानिक, सिद्धान्तों की स्थापना की है, उनके आधार

पर साहित्य में मनोवैज्ञानिक समस्याओं का निरूपण अपेक्षा कृत बढ़ गया है।

२. आधुनिक लेखक अब इस तथ्य से अवगत है कि जीवन में केवल अर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक समस्याएँ ही नहीं होती, बल्कि मनोवैज्ञानिक समस्याएँ भी होती हैं। और कई बार तो अन्य प्रकार की समस्याओं का उत्स मनोवैज्ञानिक समस्याओं में उपलब्ध होता है। हमारी आलोच्य लेखिका मन्नूजी भी इसी तथ्य से भली भाँति अवगत हैं। अत: उनके कथासाहित्य में इन समस्याओं का अनुश्यूत होना स्वाभाविक ही समझा जायेगा।

३. मन्नूजी के कथासाहित्य में मन: स्नायुगत विकृत्तियों से उत्पन्न क्षोभोन्माद, दुर्भाति, मन:श्रांति इत्यादि समस्याएँ प्रभूत मात्रा में पायी जाती हैं।

४. मन्नूजी के कथा साहित्य में लैंगिक-विपर्याय से संबद्ध विकृत्तियाँ पर पीड़न, स्वपीड़न स्पर्श आसक्ति से उत्पन्न मनोवैज्ञानिक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

५. मन्नूजी के कथा साहित्य में अहं प्रतिरक्षा क्रियातंत्र से संबद्ध दमन, तादात्मीकरण, प्रक्षेपण, विस्थापन, क्षतिपूर्ति, परिवर्तन, प्रठिगमन, स्वेंर कल्पना, वास्तविकता अस्वीकरण। प्रभृति, समस्याओं का समुचित आकलन हुआ है।

६. मन्नूजी के कथा साहित्य में इडिपस ग्रंथि, अहं (ego), इद और इगो का संघर्ष, तथा सुपर इगों से सम्बद्ध समस्याओं का आकलन उपलब्ध होता है।

७. इनके अतिरिक्त नकारीपृत्ति, पलायनवाद, कुंठा, हताशा इत्यादि मनोवैज्ञानिक समस्याओं का आकलन भी उनके कथा साहित्य में उपलब्ध होता है।

आधुनिक बोध से संबंद्ध संत्रास, उदासीनता, अलगाव, जैसी प्रवृत्तियाँ भी उनके कथा साहित्य में समुचित ढंग में समाकलित हुई हैं।

*

संदर्भानुक्रम :

१. डॉ. ममता शुक्ला - मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक,

अध्ययन पृ.२०

२. डॉ. ममता शुक्ला - मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक, अध्ययन पृ.२१

३. प्रेमचन्द - निर्मला ,पृ.६४

४. डॉ. रामरतन भटनागर-अध्ययन और आलोचना, पृ.१०

५. डॉ. लाभसिंह एवं डॉ. गोविन्द तिवारी - असामान्य मनोविज्ञान, पृ. २४८

६. मन्नूभंडारी -नायक खलनायक विदूषक, तीसरा आदमी, पृ.२४५

७. वही -वही, तीसरा आदमी पृ.२४५

८. वही -वही, क्षय, पृ. २३०

९. वही -वही 'चश्मे' पृ. १७८

१०. वही -वही 'बाँहों का घेरा' पृ. २८६

११. डॉ. ममता शुक्ला-मन्नूभंडारी के कथासाहित्य का मनोविश्लेषणात्मक, अध्ययन, पृ.११८

१२. डॉ. लाभसिंह एवं डॉ. गोविन्द तिवारी, असामान्य मनोविज्ञान पृ. ३१९

१३. मन्नू भंडारी, नायक खलनायक विदूषक,-'पंडित गजाधर शास्त्री' पृ. ५४

१४. वही -'पंडित गजाधर शास्त्री' पृ. ५५

१५. वही -वही, 'गीत का चुम्बन' पृ. ४६,४७

१६. मन्नू भंडारी एवं राजेन्द्र यादव, 'एक इंच मुस्कान' पृ. २४७-२४८

१७. मन्नूभंडारी, 'नायक खलनायक विदूषक', 'बाँहों का घेरा' पृ.३५१

१८. वही -वही, 'घुटन' पृ. २४६

१९. वही -वही, 'एक बार और' पृ. ३१८

२० मन्नूभंडारी - 'आपका बंटी', पृ. १४७

२१. वही -वही, पृ. ११४

२२. वही -वही, पृ. १६५

२३. मन्नूभंडारी-नायक खलनायक विदूषक, बाहों का घेरा, पृ.२८६

२४. वही -वही, 'अनथाही गहराईयाँ' पृ. १४५

२५. मन्नू भंडारी एवं राजेन्द्र यादव - 'एक इंच मुस्कान', पृ. १७४

२६. मन्नू भंडारी- नायक खलनायक विदूषक 'एक बार और', पृ. ३१८

२७. वही -वही 'ऊँचाई', पृ. ३५२

२८. वही -वही, यही सच है, पृ. २६८

२९. वही -वही, वही, पृ. २७१

३०. वही -वही, वही ,पृ.२७३

३१. वही -वही, वही, पृ.२७४

३२. वही -वही, वही, पृ.२७७

३३. गोपालकृष्ण मखीजा-अपसामान्य मनोविज्ञान, पृ. ६०

३४. मन्नू भंडारी -नायक खलनायक विदूषक 'क्षय', पृ.२२९

३५. वही -वही, 'बाहों का घेरा', पृ. २७८

३६. वही -वही, 'ऊँचाई', पृ. ३५४

३७. वही -वही, 'कील और कसक', पृ. ९५

३८. वही -वही, 'वही', पृ. ९५

३९. मन्नूभंडारी- आपका बंटी, पृ.१२३

४०. वही, वही, पृ.१२६,१२७

४१. वहीं, वही, पृ.१२९

४२. मन्नू भंडारी, 'स्वामी' पृ. ५०,५१

४३. गोपालकृष्ण मखीजा, अपसामान्य मनोविज्ञान, पृ. २११

४४. मन्नू भंडारी, आपका बंटी पृ. १३८

४५. वही,वही पृ. ९७

४६. मन्नू भंडारी -नायक,खलनायक, विदूषक- एक बार और, पृ. ३३४

४७. वही, वही, कील और कसक, पृ. ९८

४८. मन्नू भंडारी -नायक, खलनायक, विदूषक, बाहों का घेरा, पृ.२८५

४९. वही, वही, ईसा के घर इंसान, पृ. १०७

५०. डॉ. ममता शुक्ला, मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक,

अध्ययन पृ.१३६,१३७

५१. गोपाल कृष्ण मखीजा, अपसामान्य मनोविज्ञान, पृ.२१६

५२. मन्नू भंडारी, आपका बंटी, पृ.३६

५३. वही, वही, पृ. ८२

५४. मन्नू भंडारी, नायक, खलनायक, विदूषक, कील और कसक, पृ. ९८

५५. गोपाल कृष्ण मखीजा, अपसामान्य मनोविज्ञान, पृ. २२१,२२२

५६. मन्नू भंडारी, नायक खलनायक विदूषक, रेत की दीवार, पृ. ३८२

५७. वही, वही, तीसरा हिस्सा, पृ. ४५१

५८. वही, वही, वही, पृ. ४५७

५९. मन्नू भंडारी, नायक, खलनायक, विदूषक- यही सच है,पृ. २६९,२७१

६०. वही, आपका बंटी, पृ.१५१

६१. गोपाल कृष्ण मखीजा, अपसामान्य मनोविज्ञान, पृ.२२५

६२. वही, वही, पृ. २२५

६३. डॉ. ममता शुक्ला, मन्नू भंडारी के कथासाहित्य का मनोविश्लेषणात्मक, अध्ययन, पृ. १३२

६४. डी.एन. श्रीवास्तव, आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान, पृ. १३३

६५. मन्नू भंडारी, आपका बंटी, पृ. ७३

६६. वही, वही, पृ. ६४,६५

६७. वही, वही पृ. ९५,९६,

६८. डी.एन. श्रीवास्तव, आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान पृ.१२३

६९. मन्नू भंडारी, नायक खलनायक, विदूषक, ऊँचाई, पृ. ३४८,३४९

७०. वही, वही, वही, पृ. ३५५

७१. वही, वही, नकली हीरे, पृ. १८२

७२. वही, वही, मजबूरी, पृ. १७०

७३. वही, वही, कील और कसक, पृ. ९८

७४. वही, आपका बंटी, पृ. १५९

७५. मन्नू भंडारी एवं राजेन्द्र यादव, एक इंच मुस्कान, पृ. १७५

७६. वही, वही, पृ. १६८

७७. डी.एन श्रीवास्तव, आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान, पृ.२०७

७८. गोपालकृष्णमखीजा, असामान्य मनोविज्ञान, पृ. २३२

७९. राजेन्द्र यादव, एवं मन्नू भंडारी, एक इंच मुस्कान, पृ. १६६

८०. मन्नू भंडारी, नायक खलनायक विदूषक, कील और कसक, पृ.९६

८१. वही, वही, छत बनाने वाले, पृ. ३१३

८२. डॉ. ममता शुकला, मन्नू भंडारी के कथासाहित्य का मनोविश्लेषणात्मक, अध्ययन, पृ.१४१

८३. मन्नू भंडारी, नायक खलनायक विदूषक गीत का चुम,बन, पृ. ४७

८४. वही, वही, एक कमजोर लड़की की कहानी, पृ. ८१,८२,

८५. वही, वही, वही, पृ. ८२

८६. वही, वही, क्षय, पृ. २२२

८७. वही, वही, रानी माँ का चबूतरा, पृ. २१९

८८. वही, वही, बाहों का घेरा, पृ. २८४

८९. मन्नू भंडारी, महाभोग, पृ. १०५

९०. वही, स्वामी, पृ. १०८

९१. डी.एन. श्रीवास्तव, आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान, पृ.७८

९२. गोपालकृष्ण मखीजा, अपसामान्य मनोविज्ञान, पृ. १९३

९३. वही, वही, पृ. १९४

९४. मन्नू भंडारी, नायक खलनायक विदूषक, क्षय, पृ. २२९

९५. डी.एन. श्रीवास्तव, आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान, पृ.७३

९६. वही, वही पृ.७३

९७. मन्नू भंडारी, नायक, खलनायक, विदूषक- यही सच है, पृ. २६८

९८. वही, वही, वही, पृ. २७३

९९. वही, वही, वही, पृ. २७७

१००. वही, वही, बाहों का घेरा ,पृ.२८६
१०१. वही, वही, संख्या के पार, पृ. २८९
१०२. वही, वही, तीसरा आदमी, पृ. २४५
१०३. मन्नू भंडारी, महाभोज, पृ. १५७
१०४. वही, स्वामी, पृ. ४
१०५. वही, आपका बंटी, पृ. १२०
१०६. वही, वही, पृ. १२०
१०७. वही, वही, पृ. १२१
१०८. वही, वही, पृ. ७३,७४,१५५
१०९. वही, वही, पृ. १५५
११०. वही, वही, पृ. १९३
१११. डॉ. नीरजा, मन्नू भंडारी के उपन्यास-साहित्य का विश्लेषणात्मक, अध्ययन, पृ.४८
११२. रामविनोद सिंह, हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास में नारी चरित्र, पृ.२३९
११३. डॉ. ममता शुकला, मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक, अध्ययन पृ.१५०
११४. मन्नू भंडारी आपका बंटी, पृ. ३३
११५. वही, वही, पृ. ३७
११६. वही, वही, पृ. १०६
११७. वही, वही, पृ. ४
११८. मन्नू भंडारी एवं राजेन्द्र यादव, एक इंच मुस्कान, पृ. ११२
११९. वही, वही, '' पृ. २०९
१२०. वही, वही, '' पृ. १९६
१२१. वही, वही, पृ. ७५
१२२. मन्नू भंडारी, नायक खलनायक विदूषक, अकेली, पृ.११९
१२३. वही, वही, बन्द दरवाजों का साथ, पृ. ३४१

१२४. वही, वही, ऊँचाई पृ. ३५०

१२५. वही, स्वामी, पृ.९०,९१

१२६. वही, वही, पृ. ९८

१२७. वही, नायक, खलनायक, विदूषक-सजा, पृ.२५२, २५३

१२८. वही, वही, क्षय पृ. २२९

१२९. वही, वही, बन्द दराजों के साथ, पृ. ३३८

१३०. वही, वही, बन्द दराजों के साथ, पृ. ३४१

१३१. डॉ. ब्रजमोहन शर्मा, कथा लेखिका मन्नूभंडारी, पृ. ४०

१३२. वही, पृ. ४१

१३३. डॉ. ममता शुकला, मन्नू भंडारी के कथा साहित्य के मनोविश्लेषणात्मक, अध्ययन पृ.१५२

१३४. मन्नू भंडारी, नायक खलनायक विदूषक, जीती बाती की हार, पृ. ४१

१३५. वही, वही, त्रिशंकु, पृ. ४८०

१३६. वही, वही, कील और कसक, पृ. ९५

१३७. डॉ. रमणभाई पटेल, सातवे दशक के हिन्दी उपन्यास, पृ. २८

१३८. वही, वही, पृ.३१

१३९. मन्नू भंडारी, नायक खलनायक, विदूषक, शायद, पृ. ४३६

१४०. वही, वही, तीन निगाहों की एक तस्वीर, पृ. १३१

१४१. वही, वही, तीसरा आदमी, पृ. २४६

१४२. वही, वही, सयानी बुआ, पृ. ५२

१४३. राजेन्द्र यादव एवं मन्नू भंडारी, एक इंच मुस्कान, पृ. २१०

१४४. मन्नू भंडारी आपका बंटी, पृ.१२९

१४५. मन्नू भंडारी महाभोज, पृ. १२४

१४६. मन्नू भंडारी, नायक खलनायक विदूषक, वाहों का घेरा, पृ. २७८

१४७. वही, वही, एक कमजोर लड़की कहानी, पृ.७७

१४८. वही, वही, सजा, पृ. २५९

१४९. वही, वही, शायद, पृ. ४२४

१५०. वही, वही, बंद दराजों का साथ, पृ. ३३७,३३८

१५१. वही, वही, शायद, पृ. ४२४

१५२. मन्नू भंडारी, आपका बंटी, ३१,३२

१५३. मन्नू भंडारी एवं राजेन्द्र यादव, एक इंच मुस्कान, पृ. ७५,७६

१५४ वही, वही, पृ. १७०

१५५. मन्नू भंडारी -नायक, खलनायक, विदूषक- बाहों का घेरा, पृ. २८५,२८६

१५६. वही, वही, वही, पृ. २७९

१५७. वही, वही, चश्मे, पृ. १७८

१५८. वही, वही, एक बार और, पृ. ३१८

१५९. डॉ. नीरजा, मन्नू भंडारी के उपन्यास साहित्य का विश्लेषणात्मक,
अध्ययन, पृ. २५०

१६०. मन्नू भंडारी एवं राजेन्द्र यादव, एक इंच मुस्कान, पृ. ८३,८४,

१६१. मन्नू भंडारी आपका बंटी, पृ. ७७

१६२. वही, वही पृ. ४२

१६३. वही, वही, पृ.३१,३२

१६४. मन्नू भंडारी, स्वामी, पृ.४

१६५. मन्नू भंडारी, नायक खलनायक विदूषक, तीसरा आदमी, पृ. २४५

१६६. वही, वही, यही सच है, पृ. २७४

१६७. वही, वही, वही, २७७

१६८. वही, वही, वही, पृ. २७३

१६९. मन्नू भंडारी आपका बंटी, पृ. १८

१७०. वही, वही, पृ. १६

१७१. मन्नू भंडारी, नायक खल्नायक विदूषक, इसा के घर इन्सान, पृ. १०४

१७२. वही, वही, तीन निगाहों की तस्वीर, पृ. १३०

१७३. डॉ. ममता शुक्ला, मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक,

अध्ययन पृ. २५२

१७४. मन्नू भंडारी एवं राजेन्द्र यादव, एक इंच मुस्कान, पृ. १६१

१७५. मन्नू भंडारी, नायक खलनायक विदूषक, बाहों का घेरा, पृ. २७८

१७६. वही, वही, पृ. २८१

१७७. वही, वही, तीन निगाहों की तस्वीर, पृ. १३०, १३१

१७८. वही, वही, तीसरा आदमी, पृ. २४५

१७९. वही, वही, पृ. २४५

१८०. वही, वही, पृ. २४६